(मासिक)

ज्ञानामृत

मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये
वर्ष 53, अंक 2, अगस्त, 2017

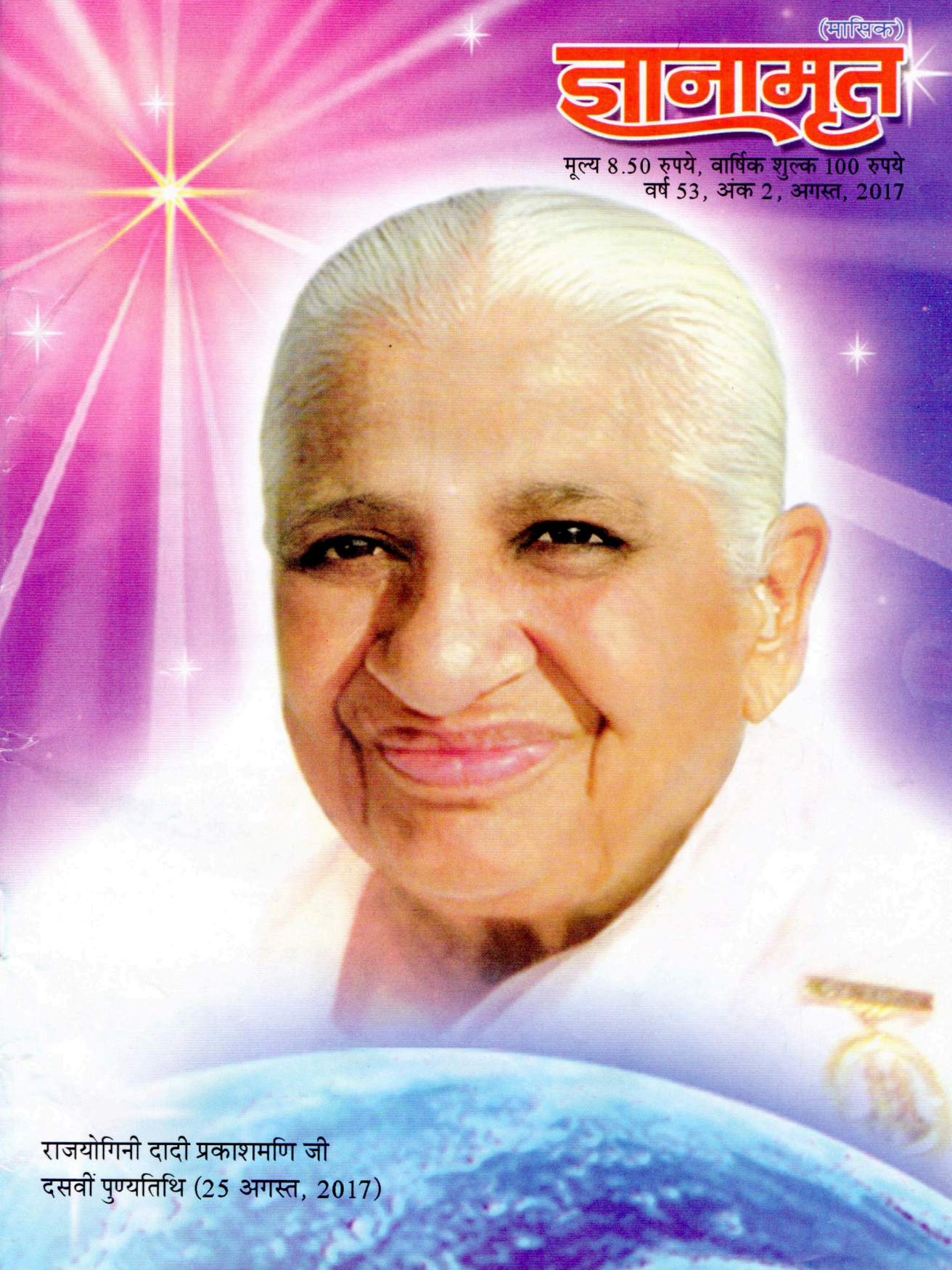

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी
दसवीं पुण्यतिथि (25 अगस्त, 2017)

1

1.नई दिल्ली-
भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता प्रणव मुखर्जी को माउण्ट आबू पधारने का निमन्त्रण देने के बाद राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन तथा ब्र.कु.हंसा बहन समूह चित्र में।

2

2.लखनऊ-
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्र.कु.राधा बहन, प्रधानमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी का स्वागत करते हुए।

3.नई दिल्ली-
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राजयोगिनी दादी जानकी जी लाल किला मैदान में ईश्वरीय सन्देश देते हुए। मंचासीन हैं सी.बी.आई.के पूर्व निदेशक भ्राता डी.आर. कार्तिकेयन, ब्र. कु. बृजमोहन भाई, ब्र. कु.आशा बहन, ब्र. कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, राजयोगिनी दादी कमलमणि जी तथा अन्य।

3

4.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
'सद्भावना द्वारा सम्पूर्ण ग्राम विकास' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.राजू भाई, पूना कृषि संस्थान के अध्यक्ष भ्राता रामखर्चे, पूसा कृषि शोध संस्थान के उपनिदेशक भ्राता जय प्रकाश, उ.प्र.के पूर्व कृषिमन्त्री भ्राता प्रदीप यादव, ब्र.कु.तृप्ति बहन तथा अन्य।

4

5.भरतपुर- राजस्थान की पर्यटन मन्त्री बहन कृष्णेन्द्र कौर को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करते हुए ब्र.कु.बबीता बहन।

5

संजय की कलम से

'चरित्र निर्माण' का अर्थ

'चरित्रवान' या 'श्रेष्ठाचारी' कौन है? प्राय: लोभ के वश रिश्वत लेने या मिलावट करने वाले को ही 'भ्रष्टाचारी' कहा जाता है। इसका अर्थ यही हुआ कि जो व्यक्ति रिश्वत और मिलावट से दूर रहते हैं, वे 'श्रेष्ठाचारी' हैं। क्या 'श्रेष्ठाचार' का अर्थ इतना संकुचित है? नहीं। श्रेष्ठाचारी और चरित्रवान वास्तव में वह है जो कि मनसा, वाचा और कर्मणा पूर्णत: निर्विकार है और दिव्य गुण सम्पन्न है। अत: दूसरे शब्दों में यों कहें कि देवी-देवता ही श्रेष्ठाचारी या पूर्णत: चरित्रवान हैं। तो श्रेष्ठाचारी या चरित्रवान बनने का अर्थ है 'मनुष्य से देवता बनना अथवा नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी बनना।' जब यह चित्र और यह विचार मन में होगा तभी आचार ऊँचा होगा और चरित्र का नव-निर्माण होगा।

चरित्र-निर्माण कैसे हो सकता है?

यह कार्य तो विद्या और शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। मनुष्य को ऐसी विद्या की जरूरत है कि जिस द्वारा वह काम-क्रोधादि विकारों पर विजय प्राप्त कर सके। संस्कारों को बदलने के लिये उसे आध्यात्मिक शक्ति की जरूरत है और वह शक्ति उसे परम पवित्र सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिल सकती है और परमात्मा से शक्ति लेने की एक मात्र विधि सहज-योग ही है। तो हम भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिये चाहे और कितने भी तरीके क्यों न अपनाते रहें, यह कार्य सफलता को तो तभी प्राप्त होगा जब मनुष्य को ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा मिलेगी क्योंकि भ्रष्टाचार का कारण है ही स्वरूप के विषय में अज्ञान तथा देह-अभिमान।

आप देखेंगे कि देह-दृष्टि के कारण ही मनुष्य में काम-वासना पैदा होती है, देह के कारण ही मनुष्य लोभ करता है, देह ही पर आधारित मनुष्य का मोह है, देहभान के परिणामस्वरूप ही क्रोध की उत्पत्ति होती है। यदि मनुष्य विदेह अवस्था में स्थित हो, स्वयं को 'आत्मा' निश्चय करे, सभी को आत्मिक दृष्टि से देखे, तो उसके मन में विकारों की उत्पत्ति नहीं होगी और उसके आचार में भ्रष्टता नहीं आयेगी। अत: मनुष्य को ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है कि जिससे वह स्वरूपस्थ हो, आनन्दमय और शान्त स्थिति में हो।

आज बहुत मनुष्य इन विकारों को जीतना चाहते हैं। उनकी इच्छा से स्पष्ट है कि कभी वे पूर्णत: पावन थे, तभी तो अब फिर उस स्थिति को प्राप्त करना चाहते हैं। जब मनुष्य यह जान लेता है कि मैं आत्मा तो पहले देवता स्थिति में थी और कि मैं सर्वशक्तिमान, परमपावन परमात्मा की सन्तान हूँ, तब उसकी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति, स्थिति सब उसे श्रेष्ठ चरित्र की ओर ले चलती हैं। ❖

अमृत-सूची

- कटु वचन प्रबन्धन *(संपादकीय)*.. 4
- जेल में आना मेरे ही कर्मों 6
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 7
- बड़ा कारोबार होते भी 8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ..9
- ममतामयी माँ थी दादी जी 12
- रक्षाबन्धन आज के संदर्भ में ...13
- रूहानियत की मूर्त.....15
- पुण्य स्मृति *(कविता)* 16
- बनाएँ इन्द्रियों को दीर्घायु.....17
- मेरा स्वभाव शान्ति है 20
- त्याग फलता है, लोभ 21
- त्याग व सेवा की मूरत माता...22
- दादी जी का हर कर्म 24
- उपकार आपका *(कविता)* 25
- कामिनी नहीं, कल्याणी 26
- हिम्मत का एक कदम.....28
- ईश्वरीय ज्ञान से आन्तरिक....29
- शिवबाबा से सुप्रीम सर्जन.....30
- सबसे प्यारा बन्धन *(कविता)* ..31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- कार्यस्थल की उन्नति में.....34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क 'ज्ञानामृत' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
Website : gyanamrit.bkinfo.in

कटु वचन प्रबन्धन

आधुनिक युग में भौतिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार इस कदर बढ़ा है कि दो या ढाई साल का बच्चा भी शरीर के अंगों के नाम अंग्रेजी में बताने लग जाता है परन्तु इन सभी अंगों का संचालन करने वाली आत्मा और आत्मा की संकल्प उत्पन्न करने वाली शक्ति मन से तो बच्चे क्या, बड़े भी अनभिज्ञ ही रह जाते हैं।

क्या है हमारी समस्या?

आज हम इस समस्या से ग्रस्त नहीं हैं कि हमारे शरीर के अंग जैसे कि आँख भटकती है या कान भटकता है या मुख भटकता है, समस्या यह है कि मन भटकता है, कहीं लगता नहीं है, चंचलता करता है, चिड़चिड़ा हो जाता है और इसी मन के बारे में हम कुछ जानते-सीखते ही नहीं। किसी पुस्तक में मन का ज़िकर नहीं। मन के बारे में अनभिज्ञता ही मन के तनाव, अवसाद, मन की व्यर्थ सोच, चिन्ता, भारीपन, नकारात्मकता, उग्रता, उत्तेजना तथा अन्य मानसिक रोगों को जन्म दे रही है।

बीमारी मन की, जाँच शरीर की

मान लीजिए, किसी ने हमें कटु शब्द बोला, उसे बोलते हुए आँखों ने देखा परन्तु आँखों में दर्द नहीं हुआ। कटु बोलते हुए उसे कानों ने सुना परन्तु दर्द कानों में भी नहीं हुआ। दर्द कहाँ हुआ? मन में। मन दुखी हो रहा है, परेशान हो रहा है, कटु शब्दों का तीर उसको जाकर लगा है। यह हमें पता चल गया है परन्तु मन है कैसा, है कहाँ, कैसे स्वरूप वाला है? ये सब बातें हम नहीं जानते। हमें रात भर नींद नहीं आई। सुबह उठकर हम चिकित्सक के पास गए। उसने हमारी जाँच की। अपने सारे यन्त्र लगा-लगा कर हमें जाँचा-परखा और कह दिया, आपकी शूगर, बी.पी., तापमान, धड़कन सब सामान्य हैं, आपको बीमार होने का भ्रम मात्र है, वास्तव में कोई बीमारी है नहीं लेकिन हमें भ्रम नहीं है, भ्रमित तो चिकित्सक है। बीमारी सॉफ्टवेयर (मन और आत्मा) की है और जाँच-परख हार्डवेयर (शरीर) की हो रही है। चिकित्सक के सारे यन्त्र इस मान्यता को लेकर बनाए गए हैं कि मानव शरीर मात्र है। चिकित्सक के किसी भी यन्त्र की पहुँच मन तक नहीं है। यन्त्रों से केवल शरीर को जाँचा गया लेकिन शरीर को तो कोई दर्द है ही नहीं। तीर तो मन और आत्मा में चुभा है जिसे निकालने के लिए इन दोनों को जानना जरूरी है।

जैसा संकल्प, वैसा जीवन

तैतरीय उपनिषद् में एक घटना का जिक्र आता है कि एक पिता ने अपने आठ साल के पुत्र से कहा, बेटा, एक बीज लाओ। पुत्र चने का एक दाना लेकर पिता के पास गया। पिता ने पूछा, बेटा, यह क्या है? पुत्र ने कहा, पिता जी, चने का दाना। पिता ने कहा, बेटा, ध्यान से देखो। पुत्र ने पुनः वही उत्तर दिया। पिता ने कहा, इसे तोड़ो। पुत्र ने चने के दो टुकड़े कर दिए। पिता ने पूछा, अब बताओ, यह क्या है? पुत्र ने कहा, ये चने के दो टुकड़े हैं। पिता ने कहा, बेटा, ध्यान लगाकर देखो, चने के इस दाने में, चने का एक नया पेड़ समाया हुआ है। अगर यह दाना अविकसित, अर्धविकसित, गला हुआ, टूटा हुआ हो तो पेड़ कैसा बनेगा? अवश्य ही पेड़ भी अर्धविकसित या अविकसित ही रह जाएगा या उगेगा ही नहीं। इसी प्रकार मन भी बीज है। जैसे इसके संकल्प होंगे, मानव जीवन वैसा ही बनेगा। यदि संकल्प शक्तिशाली हैं तो हर क्रिया सशक्त और यदि संकल्प कमजोर हैं तो जीवन की हर क्रिया कमजोर हो जाती है।

जरूरी है मीठे विचारों का प्रबन्ध

उपरोक्त उदाहरण बताता है कि मानव अपने विचारों का उत्पाद है (Man is the product of his own thoughts)। मन में, कानों के माध्यम से कटु वचन प्रवेश हुए और मन ने उनको स्वीकार कर लिया, उनको बार-बार स्मरण में लाना चालू कर दिया और ऐसे गलत भोजन को खाकर वह बीमार हो गया क्योंकि विचार ही मन का भोजन है। इसका इलाज क्या है? इलाज यह है कि हम एक मीठे, सुखदाई, पवित्र, कल्याणकारी और महान विचार का स्मरण करके मन को कड़वाहट से मुक्त कर लें। जिस प्रकार गर्मी से बचाव के लिए ठण्डक का प्रबन्ध करते हैं इसी प्रकार मन की कड़वाहट समाप्त करने के लिए मीठे शब्दों, मीठे विचारों का प्रबन्ध करें जिनका स्मरण, चिन्तन, वर्णन करते ही भीतर असीम शक्ति का संचार हो जाए और हम हताशा, निराशा, मूड ऑफ आदि मानसिक समस्याओं से बच सकें।

मुख की कड़वाहट हुई बेअसर

मान लीजिए, जब हम भोजन कर रहे थे, तो करेले की सब्जी में बहुत कड़वाहट थी। हमारा मुख भोजन खाते-खाते कड़वा हो गया। मुख की इस कड़वाहट को हम बनाए रखना चाहेंगे या तुरन्त मिटाना चाहेंगे? हममें से सभी का उत्तर होगा कि तुरन्त मिटाना चाहेंगे, नहीं तो कड़वे मुख से अन्य कोई स्वादिष्ट पदार्थ खाएंगे तो वह भी स्वादु नहीं लगेगा। हम तुरन्त ही या तो कुल्ला करके मुख की कड़वाहट धोते हैं या कोई मीठी चीज खाकर कड़वाहट को बेअसर करते हैं। इस प्रकार कड़वाहट आई और गई। उसका ना वर्णन, ना चिन्तन, ना कई दिनों तक उसका मुख पर असर। इसी प्रकार कटु बोल की कड़वाहट को भी मीठे बोल, कल्याणकारी बोल, सुखदाई बोल, उमंग भरे बोल, स्वमान के बोल से बेअसर किया जा सकता है। मीठे बोलों का सबसे बड़ा खजाना प्यारे बाबा की मुरली है जिसे हम प्रतिदिन सुनें तो सब कड़वाहट बेअसर हो जाती है। मुरली का पहला शब्द 'मीठे बच्चे' हमारे रोम-रोम में मिठास भर देता है। उसके बाद हर पंक्ति में प्यार, दुलार, ज्ञान, स्वमान, खुशी की बरसात-सी होती महसूस होती है।

गन्दगी को न भूलना भी उससे प्रेम है

हम एक अन्य उदाहरण लेते हैं। हम किसी घर के सामाने से गुजरे, किसी ने घर के भीतर से कोई गन्दगी जानबूझकर या अनजाने में फेंकी और हमारे कुरते पर छप गई। अब हम क्या करेंगे? उस व्यक्ति को उसकी गलती बताएँगे, वह मान लेगा तो भी या नहीं मानेगा तो भी, हम घर आकर कुरते को साफ कर लेंगे और बात को आई-गई कर देंगे। यदि हम गन्दे हुए कुरते को साफ करने के बजाए रोज देखें, दुखी होते रहें कि उसने गन्दगी फेंकी क्यों, कुरता गन्दा किया क्यों? उसके इस कर्म की चर्चा कइयों के आगे करते रहें। मन ही मन उसे कोसते रहें तो इसका अर्थ यह है कि हमने उसके कर्म को यादगार बनाकर अपने सामने रखा है। यह भी भीतर में छिपा गलत संस्कार है जो गन्दगी से प्रेम की ओर मोड़ रहा है, उसे भूलने नहीं दे रहा है। हमारा अन्तर्मन ऐसा खुरदुरा है कि उस पर उसके गन्दे कर्म की स्मृति चिपक गई है। हम यह तो कह रहे हैं कि उसने गन्दगी फेंकी क्यों, पर अपने को नहीं समझा रहे कि हमने उसकी गन्दगी को सहेजा क्यों? वो व्यक्ति हमारे वश में है नहीं और अपने को हम वश में करना नहीं चाहते तो हम दोनों तरफ से असफल हो गए। वास्तव में हमारे दुख का कारण हमारी यही असफलता है।

लिख दें 'प्रवेश वर्जित'

यह संसार शब्दों का, बातों का, वचनों का सुपर बाजार है। यहाँ हर श्रेणी की बातें मिलती हैं। हर कोई अपनी चीज को उत्तम श्रेणी की बताकर दूसरे के गले में डालने की कोशिश कर रहा है। यह हमारी परख पर है कि हम किन्हें स्वीकार करें और किन्हें अस्वीकार, किनका प्रभाव आने दें और किन्हें प्रभावहीन कर दें। जिन्हें हम सिरे से अस्वीकार कर देंगे, प्रभावहीन कर देंगे, वे फिर आना बन्द कर देंगे। हम किसी को कटु बोलने से रोक नहीं सकते पर अपने मन के दरवाजे पर 'प्रवेश वर्जित (No Entry)' लिख सकते हैं।

हम स्वयं भी यह ध्यान रखें कि किसी को कटुवचन न बोलें क्योंकि देंगे तो लेना भी पड़ेगा। मान लीजिए, एक बॉक्स में रंग-बिरंगी गेंदें भरी हैं। हमने उनमें से लाल रंग की गेंद उठाई और दीवार पर फेंकी। दीवार से टकराकर हमारे पास लाल गेंद ही [illegible] मधुर बोल ही लौटेंगे। जो फल हमें चाहिए ही नहीं, उसकी बिजाई बिल्कुल भी न करें, इसी में कल्याण है। भगवान शिव कहते हैं, "संकल्प बुद्धि का भोजन है, बोल मुख का भोजन है। कर्म हाथों और पाँवों का भोजन है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, फरिश्तों के बोल थे, कम बोल और मधुर बोल थे। जिस बोल का फल निकले, वह है यथार्थ बोल और जिस बोल का कोई फल नहीं, वह है व्यर्थ। अत: कम बोलो और मीठा बोलो, स्वमान से बोलो। ब्रह्मा बाप ने छोटे अथवा बड़ों को स्वमान के बोल से अपना बनाया। इस विधि से जितना आगे बढ़ेंगे, उतना विजयमाला में पिरोने लायक बन जाएंगे।"

-ब्र.कु.आत्मप्रकाश

जेल में आना मेरे ही कर्मों का फल

ब्रह्माकुमार अभिमन्यु, जीन्द कारागार (हरियाणा)

मैं 11 महीने पहले किसी कारण से जींद जेल में आया था। आने के बाद मैं इतना परेशान था, इतना टूट चुका था कि मेरे मन में आत्महत्या के विचार आने लगे। मेरी हालत देख कर सभी बन्दी चिन्तित थे। एक दिन एक बन्दी भाई मुझे ओमशान्ति की क्लास (सत्संग) में लेकर गए, जो जेल में नियमित रूप से चलती है। पहले दिन कुछ बोरियत महसूस हुई मगर फिर मैं क्लास में प्रतिदिन आने लगा। कुछ ही दिनों में मुझे अच्छी तरह समझ में आने लगा कि जीवन का चक्र क्या है, मुझे जेल में आना पड़ा, यह मेरे ही कर्मों का फल है, किसी अन्य का दोष नहीं है। जीवन के 48 वर्षों में जो न समझ सका वो यहाँ आकर समझा, शान्ति महसूस होने लगी, जीवन में नया मोड़ आया।

अब मुझे जेल में आने का अफसोस नहीं है क्योंकि सच्चाई को जान गया हूँ और मन ही मन बहुत हर्षित रहता हूँ। मुझे यहाँ परमपिता परमात्मा का सही परिचय मिला है। अब जेल, जेल नहीं, एक तपस्या-स्थली महसूस हो रही है। अब मैं घन्टों योग में बैठा रहता हूँ और मुझे जो आनंद आता है उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता हूँ। अब मैं जीवन में कभी भी रोऊँगा नहीं, सदा हँसूँगा। मैंने जान लिया है कि कर्मों के फल तो भोगने ही पड़ते हैं। अब अनुभव से कह सकता हूँ कि एक पारिवारिक व्यक्ति की अपेक्षा, कारागार में बंद व्यक्ति यदि चाहे तो आध्यात्मिक क्षेत्र में अधिक उन्नति कर सकता है। मैंने निश्चय किया है कि जब भी जेल से बाहर निकलूँगा, एक बेहतरीन मानव बनकर बाबा के विश्व कल्याण के कार्य में मददगार बनकर रहूँगा।

ज्ञान में आने के बाद मैंने योग के कई प्रयोग किये हैं और उनमें सफलता मिलने से मैं बहुत आनन्द विभोर रहता हूँ। पहला प्रयोग– शिव बाबा कहते हैं, अमृतवेले याद में बैठो तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा। पहले मैं पाँच बजे उठता था। मैंने बाबा से कहा, बाबा, मेरे को सुबह 3 बजकर 45 मिनट पर उठाओ। अगली सुबह 3 बजकर 45 मिनट पर 3 बार मेरा पैर हिलाया गया। मैंने उठ कर देखा तो कोई भी नहीं था। मैं उठ कर योग में बैठ गया। मुझे पूरा निश्चय हो गया कि बाबा ने ही मुझे उठाया है। तब से मैं रोज अमृतवेले योग करता हूँ। योग में ऐसी प्राप्तियाँ हो रही हैं जो लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। योग के और भी बहुत सारे सफल प्रयोग किए हैं जिनसे बाबा ने मेरे उमंग-उत्साह को बढ़ा दिया है। ❖

बड़ा कारोबार होते भी सदा निश्चिंत रहती थी दादी प्रकाशमणि

ब्रह्माकुमारी डॉ.सविता, शान्तिवन

सन् 1989 में मैंने एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई पूरी की और सन् 1990 में पांडव भवन (माउंट आबू) में रहने के लिए आई। तब ग्लोबल हॉस्पिटल के लिए नींव डाली गई थी। डॉक्टर्स, नर्सेज एवं अन्य मेडिकल स्टाफ, जो ईश्वरीय ज्ञान में थे और हॉस्पिटल के लिए सेवायें दे सकते थे, को बुलाया गया था। मुझे भी पांडव भवन में बाबा डिस्पेन्सरी में सेवा दी गई। बीच-बीच में मैं दादी प्रकाशमणि जी के पास बी.पी. चेक करने या दवाई देने के लिए जाती रहती थी। अन्य दादियाँ जैसे दादी जानकी, दादी मनोहर इन्द्रा, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि आदि सभी के पास जाने का सौभाग्य मुझे मिलता था। सन् 2000 से, जब आबू रोड, तलहटी स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर में दादी जी का अधिक रहना होता था और यहाँ मेडिकल सुविधायें पर्याप्त नहीं थी तो डॉक्टर होने के नाते तब से उनके अंग-संग रहकर सेवा करने का परमभाग्य मुझे मिला। उसके बाद सन् 2007 तक पूरा समय मैं दादी जी के साथ रही।

स्नेह और शक्ति का अद्भुत संतुलन

दादी जी तो ब्रह्मा बाप समान थे। बाबा ने अंत समय अपनी सर्वशक्तियाँ दादी जी को वर्से में दी थीं। दादी जी में स्नेह और शक्ति का अद्भुत संतुलन था। सभी की विशेषताओं को पहचान कर उन्हें सेवा में लगाना, सभी को सम्मान व स्नेह देना, माँ की तरह कमियों को मन में न रखकर, न केवल क्षमा करना बल्कि उन्हें और ही सहयोग देकर आगे बढ़ाना – ये सब दादी जी के गुण थे जो सबको एक सूत्र में बांधे रखते थे। जैसे दादी जी सबको दिल का स्नेह व सम्मान देती थीं, ऐसे ही सभी भी दादी जी का दिल से सम्मान करते थे। जहाँ प्रेम होता है, वहाँ व्यक्ति सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाता है। आधी रात को यदि दादी जी किसी को, किसी कार्य के लिए कहती थी तो भी वह कार्य तुरंत साकार हो जाता था, चाहे कितना भी मुश्किल क्यों न हो।

एक बार पाण्डव भवन की किचन, जो बेसमेन्ट में है, का मरम्मत का कार्य चल रहा था। दादी जी ने क्लास में पूछा, कौन सीमेंट की तगारी, ईंटें उठाकर सहयोग करेंगे? सभी ने हाथ उठाया। फिर तो नाश्ते के बाद का दृश्य देखने जैसा था। सभी सेवाधारी, मधुबन निवासी, हॉस्पिटल के भाई-बहनें लाइन में खड़े होकर तगारी आगे बढ़ा रहे थे और देखते ही देखते दो दिन में किचन तैयार हो गयी।

दादी जी को सेवा में जब कोई नवीनता लानी होती थी तो वे क्लास में कहते थे, आज अमृतवेले दादी को एक संकल्प आया है, कहूँ? जब सभी कहते थे, हाँ, तो दादी जी अपना विचार बताते थे। जैसे एक लाख जनता को एकत्रित कर बड़ा कार्यक्रम करने का विचार दादी जी ने वरिष्ठ बहनों की मीटिंग में बताया। हाँलाकि उस समय यह इतना सरल कार्य नहीं था, फिर भी बहनों ने हाँ जी कहा और दो महीने के अंदर ही अहमदाबाद में एक लाख जनसमूह के बीच बड़ा कार्यक्रम हुआ और फिर तो एक के बाद एक, भारत के 25 बड़े शहरों में, बड़े कार्यक्रम हुए।

शेष भाग पृष्ठ 11 पर

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- शान्तिवन में रहते आप क्या महसूस करती हैं?

उत्तर- साक्षी होकर अपने को देखो। हम सब यहाँ (शान्तिवन में) साक्षी होकर बैठे हैं। बाबा सकाश दे रहे हैं, सच्चाई, प्रेम भरी सकाश, चारों ओर लाइट-माइट अपना काम कर रही है। हम तो बैठे हैं। हमको सिर्फ लाइट रहना है। लाइट रहने से, अशरीरी बनकर रहने से बहुत अच्छा लगता है। यहाँ ही बैठे रहें, ऐसा दिल करता है। शान्तिवन में बैठ साक्षी हो करके देखते हैं तो लगता है कि ऐसा स्थान विश्व में कहीं नहीं है। यहाँ से वायब्रेशन विश्व में जा रहे हैं। विश्व की आत्मायें आ करके हमको यह अनुभव बता रही हैं। यहाँ संगठन का ऐसा वायुमण्डल है जो सबको कशिश (खींच) होती है इसलिए जहाँ हमारा मन होगा, वहाँ हमारा तन होगा। मन बड़ा अच्छा खुश हो गया, भटकना छोड़ दिया। संकल्प शुद्ध, मन शान्त, दृष्टि-वृत्ति बड़ी अच्छी है, माना बदल गए हैं।

प्रश्न- दादी जी, राइट क्या है? रॉंग क्या है? कई बार बुद्धि में यह युद्ध चलता है। कैसे मालूम पड़े कि हम श्रीमत पर, मनमत पर या परमत पर चल रहे हैं?

उत्तर:- श्रीमत क्या है? मनमत क्या है? परमत क्या है? यह अच्छी तरह जानने से मन कहीं भी नहीं जाता है। श्रीमत इतनी सुन्दर है, उस पर प्रैक्टिकल चलने से बहुत सुख मिलता है। श्रीमत पर चलने से मन बहुत खुशी में रहता है। मन मेरे से भी खुश है, आप लोगों से भी खुश है। मुझे तो मनमत चलाना आता ही नहीं है। मुझे दर्शनीय मूर्त बनना बहुत मीठा लगता है, साइलेंस अच्छी लगती है, अन्दर ही अन्दर शान्त। वास्तव में विघ्न लाने वाले हम खुद ही हैं क्योंकि प्रश्न करते हैं, यह क्यों हो रहा है, क्या हो रहा है? तो क्यों और क्या का आवाज़ सुन करके हम कहेंगे, शान्त रहो, खुश रहो। एक-दो को इज्जत दो, यह बहुत अच्छी और ऊंची बात है। विघ्न क्यों आते हैं? हम शान्ति की शक्ति से मिलनसार क्वालिटी नहीं बने हैं। मिलनसार क्वालिटी कभी अनावश्यक बात नहीं करते हैं इसलिए कोई क्वेश्चन ही नहीं है। रोज़ की मुरली से ऐसा क्लीयर आइना मिलता है, उस आइने में अपने को चेक करना है। जो अपने को चेक करता है वो विघ्न-विनाशक है। बाबा हमारे से क्या चाहता है, मैं वही करूँगी ताकि हमारे से कोई पाप कर्म न हो।

झूठ, चोरी, ठगी, निन्दा.. दुनिया में कॉमन है पर यहाँ कोई में भी ये चारों बातें नहीं होंगी। अगर कोई किसी की भी निन्दा करता है माना विघ्न डालता है। मेरी कोई निन्दा करता है तो मुझे दु:ख होता है परन्तु मैं किसी की निन्दा करूँ तो...! निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोई... उसको मित्र समझना है। निन्दा करने से वातावरण खराब होता है इसलिए सब अच्छा है। मैं समझती हूँ, दिल सच्ची है तो मुझे कोई की कमी नज़र नहीं आती है क्योंकि सम्पन्न बनने की अभी ये थोड़ी-सी घड़ियाँ हैं। चक्कर को सामने रखें तो बहुत थोड़ा समय है। ऊपर जाकर फिर नीचे आयेंगे, यह स्मृति बनी रहती है। फलाना यह करता है, यह

करता है... यह वेस्ट ऑफ टाइम है, यह विघ्न है। प्यार से सोचें कि जो कोई भी कुछ करता है, चलो उसका पार्ट है। मुझे अपना अच्छे से अच्छा पार्ट बजाना है। मेरी स्मृति, दृष्टि, वृत्ति ऐसी हो जो बाबा मेरे से खुश। मुख्य बात, अभी अपने को बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए समय को सफल करो, बातों में नहीं जाओ। जब बाप है तो बात नहीं है। बातें हैं तो बाबा नहीं है। हम शान्ति से, प्रेम से रहते हैं तो दिन-रात स्वप्नों में भी बाबा ही बाबा है। दुनिया में रहते हुए कर्म तो करना ही है, पर कर्म ऐसा हो जो सबको कर्मातीत बनने की अन्दर लगन हो। हमारे योग्य जो कर्म हैं वो मिस न करूँ पर अन्दर में सारे दिन कर्मातीत बनना भूलता नहीं है। आप सभी में मेरी उम्मीदें हैं, मीठा बोल, मिठरा मीठा बोल...। आप बाबा के दिल में बैठ जाओ। कभी भी मन को फ्री नहीं छोड़ो।

प्रश्न- अपनी ऊँची अवस्था कैसे बनायें, उसके लिए क्या करें?

उत्तर- बाबा कहते हैं, कर्म पर ध्यान रखने के पहले मन-बुद्धि पर ध्यान रखने की बात है। मनसा-वाचा-कर्मणा हर चीज़ की कीमत है। कथनी एक, करनी दूसरी न हो। एक है शिक्षा, दूसरी है सावधानी। तो बाबा की शिक्षाओं को सुनते सावधान रहना समझदार का काम है। एक तो गलती होवे नहीं, यदि होवे तो सेकेण्ड में अपने को क्षमा करो या दूसरे को क्षमा करो। जैसे कुछ हुआ ही नहीं, बिल्कुल कुछ याद ही न आये। मैं समझती हूँ, मेरे मुख से कभी नहीं निकलेगा कि फलानी बात हुई थी, असुल नहीं, नहीं तो दिल में धड़कन हो जाए। शब्द है सावधान परन्तु बहुत फायदे वाला है। करने के बाद पश्चाताप करना शोभता नहीं है। बाबा ने कहा, दर्शनीयमूर्त बनो। बड़ी बात नहीं है, कदम-कदम पर वाह मेरा सतगुरु! बाबा को बाबा के रूप में देखो, टीचर के रूप में देखो, सतगुरु के रूप में देखो तो बहुत अच्छा है। गुरु के चेले नहीं हैं परन्तु जो उसका फरमान है उसे पालन करने में बड़ा अच्छा है। सावधान रहने वाले, कैसी भी बात में कभी घबराते नहीं हैं। खुद सावधान रहो, एक-दो को मुख से सावधानी नहीं दो पर हमारे सावधान रहने से उनका भी भला होता है। कभी कुछ भी हो जाता है, फिर भी घबरायें नहीं, कोई रास्ता निकल आयेगा। कहने का मतलब है, अपने को सावधान रखें। बाबा को साथी बना कर सबके साथ साक्षी हो कर हर पार्ट प्ले करें।

हमारा यह हीरे जैसा जन्म है, इसे कौड़ियों के पीछे नहीं गँवायें। जन्म हीरे जैसा है, हीरे की कीमत बहुत होती है। हीरा होगा तो सोने की डिब्बी में रखेंगे। हमारे जीवन की कीमत बहुत है। यह कौड़ियों के पीछे न जाए। हीरे जैसा जन्म है, हीरो पार्टधारी हैं। बाबा का ज्ञान तो अच्छा है, पर बाबा ने जो ड्रामा का ज्ञान दिया है, वह बहुत अच्छा है। ड्रामा शान्ति देता है, बाबा शक्ति देते हैं। तुम सिर्फ शान्ति, विश्वास से चलो। विश्वास ने बहुत काम किया है। हम कौन, किसके हैं? क्या कर रहे हैं? यह स्मृति में रखो। दिल से दुआयें दो, दुआयें लो। कोई दुआ मांगता नहीं है पर दुआओं से अच्छा चल रहा है। हर एक अपना मित्र आप है, दूसरा बाबा को मित्र बना दिया है तो सभी हमारे मित्र हैं। किसके लिए भी दिल में, मन में मित्रता भाव है तो भावना के कारण कभी भी टाइम खराब नहीं जायेगा। समय सफल तो सब सफल।

प्रश्न- एकाग्रता का बहुत महत्व है, अन्तर्मुखता और एकाग्रता का आपस में क्या सम्बन्ध है?

उत्तर- जब ज्ञानमार्ग पर पाँव रखते हैं तो मन को शान्त करके, बुद्धि को एकाग्र और स्थिर बनाने के लिए अटेन्शन देते हैं। छोटी-सी बात पर चिंतन चलना, यह शोभता नहीं है। हर एक का पार्ट अपना है, यह ड्रामा का नॉलेज है। आत्मा और परमात्मा के ज्ञान के साथ में जब ड्रामा का ज्ञान आ जाता है तो अन्तर्मुखी बन जाते हैं। अन्तर्मुखी बनने से एकाग्रता की शक्ति आ जाती है, फिर अपने आपको देखते हैं तो बड़ा मजा आता है। अन्तर्मुखता के बिगर एकाग्रता नहीं होती है। तो अन्तर्मुखता में अन्दर जाते हैं, एकाग्रता से शान्तचित हो जाते हैं। ❖

बड़ा कारोबार होते ..

पृष्ठ 8 का शेष भाग ...

दिल को लगते थे प्यार भरे बोल

मैं जब डिस्पेन्सरी में सेवा करती थी तो बिल्कुल नई थी लेकिन फिर भी दादी जी मुझ पर विश्वास करके बड़ी जिम्मेवारी सौंपते थे। एक बार मोहिनी दीदी का बुखार उतर नहीं रहा था, उनको अचानक रात को अहमदाबाद ले जाना था। दादी जी ने मुझे उनके साथ भेजा। कभी मैं मुरली क्लास में सामने बैठी होती थी तो दादी जी बहुत प्यार से मुझे 'डॉक्टर' कहकर पूछते थे तो उनके वो प्यार भरे बोल मेरे दिल को लगते थे और सारा दिन मुझे उसकी खुशी और नशा अनुभव होता था।

दादी जी मुरली भी ऐसे सुनाते थे जैसे बाबा के प्यार में मगन गोपिका हो। एक बार दादी जी ज्ञान सरोवर मुरली सुनाने जा रहे थे। मैंने दादी जी को गाड़ी में बिठाया और खड़ी हो गई। मैं उनके साथ नहीं जाती थी, मुन्नी दीदी, मोहिनी दीदी और ईशू दादी जाते थे पर तभी एकाएक दादी जी ने मुझे कहा, सविता, चलो बैठो गाड़ी में। दादी जी की ऐसी बातें मन को छूती थीं। ऐसा कितनी ही बार हुआ। तब लगता था, वो सचमुच माँ हैं और अपने हर बच्चे का ख्याल रखती हैं।

दादी जी सदा निमित्त, निर्मान भाव से सेवा करते थे। यहाँ तक कि 'मैं' शब्द का प्रयोग भी दादी जी नहीं के बराबर करते थे। चाहे बहुत बड़ा कारोबार था फिर भी हमेशा 'बाबा जिम्मेवार है', 'करावनहार है', इस निश्चय से वे निश्चिन्त रहते थे। दादी कभी किसी का परचिन्तन नहीं करते थे, कभी किसी की कमी चित्त पर नहीं रखते थे। कोई कैसी भी गलती करते थे, दादी सावधानी देकर क्षमा कर देते थे। दादी जी के इन गुणों से मुझे प्रेरणा मिलती रही।

सूझबूझ, स्नेह और वात्सल्य

सन् 1993 के बाद काफी बड़े-बड़े निर्माण कार्य मधुबन में हुए। जब वो प्रारंभ किये गये तो उपलब्ध साधनों के आधार पर असंभव प्रतीत होते थे पर दादी जी का बाबा के कार्य में पूर्ण निश्चय था। दादी जी ने सहज तरीका बताया कि हर सेवाकेन्द्र पर निर्माण कार्य की भंडारी रखी जाये और हरेक एक रुपया रोज डाले। दादी जी की सूझबूझ का ही कमाल था कि ज्ञानसरोवर एवं शांतिवन के निर्माण कार्य समय पर पूर्ण हो गये। दादी जी प्रोजेक्ट शुरू होते ही उद्घाटन की भी तारीख दे देते थे जिससे सभी उमंग-उत्साह से समय पर कार्य पूरा करने की कोशिश करते थे। दादी जी जब कार्यक्रमों, सम्मेलनों में आने वाले मेहमानों से मिलते थे तो बहुत प्यार से उन्हें व्यसन छोड़ने को कहते थे। दादी जी के स्नेह और वात्सल्य भाव से प्रेरित होकर वे तुरंत दादी जी के सामने व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा करते थे।

अपने से भी आगे बढ़ाने की शुभभावना

एक बार राजस्थान के राज्यपाल एम.चेन्नारेडी जी माउंट आबू प्रवास पर थे। उन्हें पांडव भवन पधारने का निमंत्रण दिया गया तब 500 समर्पित बहनों का संगठन ओमशान्ति भवन में था जिनके सामने उनका कार्यक्रम था। इतनी सारी श्वेत वस्त्रधारी बहनों को देखकर वे नतमस्तक हो गये और अपने संबोधन में कहा कि दादी जी, आपने अगर अपने समान इतने गुरु तैयार कर लिये हैं तो मुझे पूरा विश्वास है कि सतयुग जरूर इस धरती पर आयेगा। वे इतने प्रभावित होकर गये कि राजभवन में बाबा का कमरा भी बनवाया। दादी सभी बहनों को अपनी सखी कहती थीं और सभी उनसे भी आगे बढ़ें, ऐसी शुभभावना रखती थी।

माताओं से विशेष स्नेह

दादी जी का वैसे तो सभी आत्माओं से स्नेह था पर माताओं से विशेष स्नेह था। माताओं के लिए दादी जी विशेष कार्यक्रम बनाते थे ताकि उनकी उन्नति हो। अपने अंतिम वर्ष में जब दादी जी बीमार थे, उनसे किसी को व्यक्तिगत मिलने नहीं दिया जाता था। माताओं का दादी जी से बहुत प्यार था। जब दादी जी देखते थे कि दरवाजे के बाहर बहुत-सी मातायें उन्हें देखना चाहती हैं तो कहते थे कि मुझे दरवाजे तक ले चलो और फिर दरवाजे से ही हाथ हिलाते हुए प्यार से सबको दृष्टि देते थे। तब सभी मातायें ऐसा महसूस करतीं जैसे उन्हें सब कुछ मिल गया हो।

दादी जी दिन में 4 बार मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) पढ़ते थे। रात को सोने से पहले तो अवश्य ही पढ़ते थे चाहे सोने में कितनी ही देर क्यों न हो जाये। मुरली पढ़ने के बाद दादी जी एक मिनट में सो जाते थे। मैं सोने से पहले दादी जी के कमरे में रहती थी। लगभग एक घंटा उस समय दादी जैसे सिर्फ हमारे साथ ही होते थे। मुरली की कोई बात उन्हें विशेष लगती तो वे सुनाते थे। अपना कोई विशेष अनुभव भी हमें सुनाते तो हम उसे रिकॉर्ड कर लेते थे। उन दिनों को याद करके बहुत खुशी मिलती है। ड्रामा में बाबा ने ऐसा भाग्य दिया जो दादी जी के इतना समीप रहे। ❖

ममतामयी माँ थी दादी जी

ब्रह्माकुमारी कुसुम, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)

हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि ममता की मूरत थी, रहमदिल थी, उदारचित्त थी। जो कुछ करने के लिए कहती थी, उसे करने की शक्ति भी भर देती थी। ज्ञान में आने के दो मास के अंदर ही मुझे बाबा से मिलने मधुबन जाने का सुअवसर मिला। मधुबन में जब दादी जी से मिली तो उन्होंने पूछा, आपका लक्ष्य क्या है, आप क्या बनना चाहती हो? मैंने कहा, मुझे तो आपके जैसा बनना है। मैं तब गले और कान में गहने पहने हुए थी। दादी जी ने कहा, तुम मेरे जैसी कैसे बनोगी, तुमने तो ये गहने पहनकर रखे हैं। मैंने उसी घड़ी गहने उतार दिये और कहा, दादी जी, मुझे आपके जैसा बनना ही है। दादी जी ने पूछा, पक्का? मैंने कहा, बिल्कुल पक्का। फिर लौकिक घर गई तो पिताजी ने कहा, अभी तुम्हें और पढ़ना है। मैंने उन्हें कहा कि मुझे तो भगवान मिले हैं और मैं दादी जी से वायदा करके आई हूँ कि मुझे आप जैसा ही बनना है। जैसे ही यह बात कही, उन्होंने एक सेकेण्ड में मान ली। मुझे अनुभव हुआ कि दादी जी की वाणी में बहुत शक्ति है।

जब सन् 1984 में बाबा से मिलने मधुबन गई तब दादी जी ने पूछा, कुसुम, चन्द्रपुर में मेला हुआ है? मैंने कहा, नहीं दादी जी, अभी तो वहाँ छोटा-सा किराये का मकान है, बड़ा लेंगे तब मेला करेंगे। दादी जी ने कहा, नहीं, तुम्हें इसी वर्ष मेला करना है। उस समय मेरे साथ 20-25 भाई-बहनें थे, वे भी दादी जी से मिल रहे थे। मैंने कहा, दादी जी, आपने कहा है तो मेला होना ही है। हम वापिस चन्द्रपुर आये और क्लास में सभी को यह बात बताई। सभी ने एक सेकेण्ड में हाँ कर दी। जब मेले की तैयारियाँ चल रही थीं तो मुझे हर पल अनुभव होता रहा कि मेरे साथ दादी जी खड़े हैं और मुझे प्रेरणा दे रहे हैं। मैंने दादी जी को निमंत्रण गीत द्वारा भेजा, दादी जी, आप अवश्य आना जी, हमारे में शक्ति-युक्ति भरना जी। दादी जी ने कहा, शक्ति-युक्ति दोनों आपके पास हैं और मैं अनुभव कर रही थी कि दादी जी मुझे सबकुछ करने की शक्ति-युक्ति दे रही हैं। शक्तियों से भरपूर दादी जी ऐसे दूसरों में भी शक्तियाँ भरती थीं।

मैं जब मधुबन जाती थी तो दादी जी कभी-कभी मुझे भोजन पर बुलाकर अपनी बाजू में बिठाती थीं। उस घड़ी अनुभव होता था कि मैं आत्मा मास्टर ब्रह्मा के साथ भोजन कर रही हूँ। मुझे एक अनोखी आंतरिक खुशी का अनुभव होता था। दादी जी कहती थीं, देखो कुसुम, हमें तो साकार बाबा ने बहुत प्यार किया, आपको कौन करेगा, दादी ही करेगी ना? ऐसे कहकर पुचकार देती थीं। हमारी स्नेही दादी जी साकार में हमारी मात-पिता थीं, ममतामयी माँ थीं। हमारे पुरुषार्थी जीवन की प्रेरणास्त्रोत थीं। ❖

रक्षाबन्धन आज के सन्दर्भ में

ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, बहल (हरियाणा)

जैसे-जैसे रक्षा-बन्धन का त्योहार समीप आने लगता है, भारतीय समाज में इसे मनाने की भिन्न-भिन्न योजनाएँ व तैयारियाँ जोर-शोर से आरम्भ हो जाती हैं। आइये! भिन्न-भिन्न वर्गों द्वारा की जाने वाली तैयारियों पर एक नजर डालें –

1.व्यापारिक प्रतिष्ठान – नये-नये डिजाइन की राखियाँ बनाना, सप्लाई करना, बिक्री करना ताकि अधिक से अधिक पैसा कमाएँ।

2.कम्पनियाँ या कारपोरेट घराने – अपने अधीनस्थ महिला कर्मचारियों को कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ, बोनस या कोई उपहार आदि देकर त्योहार की खुशियाँ बाँटते हैं।

3.छोट-बड़े अधिकारी – यदि घर से काफी दूर नौकरी करते हैं तो रक्षाबन्धन पर इतनी छुट्टियों की आशा रखते हैं कि परिवार में जाकर त्योहार की खुशियों को साझा कर सकें।

4.महिलाएँ – अब की बार राखी बांधने के बदले में किस भाई से क्या-क्या उपहार मिलेगा? राखी बांधने की रस्म पर कितना खर्च होगा? मतलब घाटे का सौदा न रह जाए।

5.पुरुष – परिवार में जितनी बहने हैं उन सबको राखी पर क्या-क्या देना है? कितना खर्च होगा? मतलब बजट नियन्त्रण में रहे।

6.सरकार – कुछ राज्य सरकारें त्योहार वाले दिन रोडवेज बसों में महिलाओं को नि:शुल्क सफर का तोहफा देकर त्योहार में अपनी सहभागिता दर्ज करती हैं।

7.इस त्योहार के मद्देनजर कुछ संस्थाएँ या व्यक्तिगत भी समाज के सक्षम और अक्षम दोनों ही वर्गों को राखी बांधते हैं जिसके पीछे भी अधिकतर पैसा या प्रचार की ही कामना रहती है।

लेकिन दूर तक नजर दौड़ाने पर भी रक्षाबन्धन का जो मूल मर्म है कि पुरुष समाज के द्वारा नारी के मान-सम्मान या उसकी अस्मिता की रक्षा की जाए – इसकी तैयारियाँ जोर-शोर से ही रही हों या ऐसी कोई योजनाएँ बन रही हों – यह तो कहीं नहीं दिखता।

आज हमें भारत देश के अद्‌भुत त्योहारों का मर्म समझने की आवश्यकता है। उसमें भी विशेष रूप से है रक्षाबन्धन का वास्तविक रहस्य। क्योंकि यह त्योहार एक ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय से जुड़ा हुआ है जिसको लेकर आज समूचा विश्व चिन्तित है और वह विषय है दुनिया की आधी आबादी के मान-सम्मान की रक्षा। हमारे देश में सबसे अधिक खर्च "रक्षा" पर हो रहा है लेकिन यह खर्च किस प्रकार की रक्षा पर हो रहा है? देश की आधी आबादी तो खतरे में है, भय के साए में जी रही है। यदि आज महिलाएँ घरों में, स्कूल-कालेजों में, दफ्तर और बाजारों में, मायके व ससुराल में सुरक्षित ही नहीं हैं तो फिर रक्षा के नाम पर खरबों रुपये खर्च करने का औचित्य क्या है?

रक्षाबन्धन का केवल इतना सीमित-सा अर्थ नहीं है कि कुछ रुपये भाई की जेब से निकलकर बहन के पर्स में आ जाएँ और कुछ महंगे या सस्ते उपहार जो दुकान की शोभा

बढ़ा रहे थे वे अब बहन के घर की शोभा बढ़ाएँ। यह रस्म तो भाई-बहन के बीच इस त्योहार के बिना भी चलती ही रहती है।

राखी हर भाई की कलाई पर बांधी जाती है। शायद ही कोई कलाई इस दिन सूनी रहती हो। राखी जेल की सलाखों के भीतर भी जा रही है तो देश की सरहद पर और सरहद के पार भी जा रही है। सामने बैठकर भी और पोस्ट तथा ई-मेल से भी जा रही है। हर एक बहन किसी न किसी को राखी बांधती है। हर कोई भाई किसी न किसी बहन से राखी बंधवाता है। फिर क्यों दिन-प्रतिदिन बहनों पर होने वाले अत्याचारों का ग्राफ बढ़ता जा रहा है?

त्योहार का सूक्ष्म पहलू

रक्षाबन्धन का त्योहार मनाने का वर्तमान स्वरूप जो हमारे सामने है जिसमें राखी बांधना, तिलक लगाना, मुख मीठा कराना और उपहारों का आदान-प्रदान करना – इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी समय की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना का मात्र भौतिक और बाहरी रूप है। असली घटना तो कुछ और रही होगी जो समय के अन्तराल में कहीं अदृश्य हो गई है और अब हम हर वर्ष कुछ स्थूल रस्म निभा कर त्योहार की इतिश्री कर देते हैं। अब समय आ गया है कि हम नये सिरे से इसके सूक्ष्म पहलू पर विचार करें कि कहीं यह वही महाभारत काल तो नहीं आ गया है जब द्रौपदी को पाँच पति होते हुए भी उसके स्त्रीत्व की रक्षा के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ा था। आज भी हर एक नारी को ये पाँच-पाँच पति हैं, आइये देखें –

1.धनवान: आज नारी आर्थिक रूप से सशक्त है, आत्मनिर्भर है।

2.बलवान: शस्त्र चलाना, युद्ध लड़ना, जूडो-कराटे, बोक्सिंग, कुश्ती सब जानती है।

3.पदवान: राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री जैसे शीर्ष पदों पर आसीन है।

4.विद्वान: ऊच्च शिक्षा प्राप्त है।

5.भक्तिवान: धर्मपरायण है। ईश्वर में आस्था रखती है।

लेकिन इन पाँच विशेषताओं अर्थात् पतियों की स्वामिनी होते हुए भी आज नारी सुरक्षित नहीं है।

पवित्रता का व्रत

कहते हैं, जब द्रौपदी का दु:शासन के द्वारा चीरहरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को पुकारा और उसकी पुकार सुनकर भगवान को आना पड़ा। द्रौपदी आज की नारी का प्रतीक है और दु:शासन, कुव्यवस्था का प्रतीक है। द्रौपदी का जिस सभा में चीरहरण हो रहा है उसमें उसके पाँचों पति, गुरुजन और अन्य सम्बन्धी भी हैं लेकिन मूल्य व मर्यादाविहीन सामाजिक कुव्यवस्था के कारण सभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं। यही धर्मग्लानि का मुख्य लक्षण है जिसने भगवान का भी सिंहासन हिला दिया और उसे धरा पर उतार दिया। ऐसी विकराल परिस्थितियों में धरा पर उतरे भगवान ने पहला आदेश ही सारी मानवता को यह दिया कि सबसे पहले तुम पवित्रता का व्रत लो। अपने हाथ पर धागा बान्ध कर यह प्रण करो कि हम, नारियों को बहन की दृष्टि से देखेंगे। फिर कुछ नारियों ने भी भगवान के इस कार्य में साथ देने की हिम्मत दिखाई और स्वयं आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने की ठान ली तो भगवान ने उनको भी यह अधिकार दे दिया कि तुम भी अन्य लोगों को यह धागा बांधकर उनसे माताओं-बहनों की रक्षा का वचन ले लो। तभी द्रौपदियों की रक्षा दु:शासनों से हो सकेगी। इसी की याद में रक्षाबन्धन के दिन बहनें, भाइयों को राखी बांधती हैं।

'यादगार' और 'प्रैक्टिकल' एक साथ

वर्तमान समय 'यादगार' और 'प्रैक्टिकल' दोनों घटनाओं का संगमकाल चल रहा है। एक तरफ तो पिछले धर्मग्लानि के समय भगवान द्वारा किये गये कर्त्तव्य की धुँधली-सी यादगार रक्षाबन्धन का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है और दूसरी तरफ भगवान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पवित्र बहनों के द्वारा दु:शासन को परिवर्तन कर सु:शासन की नींव डाल रहे हैं। ❖

रूहानियत की मूर्त दादी प्रकाशमणि जी

ब्रह्माकुमार शिवकुमार, बी.के.कालोनी (आबू रोड)

दादी प्रकाशमणि जी का जीवन एक महकते हुए गुलदस्ते की तरह था। उनके हर कर्म से गुणों की खुशबू आती थी। उनके नेत्रों में हर पल रूहानी भाव होता था। उनकी एक दृष्टि मात्र से शीतलता का अनुभव होता था। जब दादी जी शान्तिवन में डायमण्ड हॉल में पधारती, उनका रूहानी प्रेम और हाथ हिलाकर आशीर्वाद देते हुए दैवी स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई देता।

हरेक को प्यार और सम्मान

वे इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका थी पर उन्होंने छोटे से छोटे बच्चे को भी बेहद प्यार और सम्मान दिया। हरेक का हालचाल पूछा। वे कहतीं, बाबा का एक-एक बच्चा विशेष है, बाबा का यह यज्ञ है, कभी किसी को कोई तकलीफ न हो। यज्ञ की व्यवस्था अनुसार सबको सेलवेशन मिलनी चाहिये। हज़ारों की सभा के बीच वे पूछ लेती कि किसको कोई सुविधा चाहिये तो बोलो, दादी को निस्संकोच होकर बताओ। सब भाई-बहनें रूहानी स्नेह की उनकी यह भावना देख गद्‌गद् हो जाते। वे कहतीं, यह बेहद बाप का सो आप बच्चों का घर है, आप यहाँ मेहमान नहीं हो, अपना घर समझकर आराम से रहना।

वाणी में मधुरता

दादी जी को जब कोई कहता कि दादी जी, ये भाई या ये बहनें बहुत अच्छे हैं तो वे स्नेह से कहतीं कि कौन अच्छा नहीं है, सब तो अच्छे हैं, बाबा के हर बच्चे में विशेषतायें भरी हुई हैं। उनकी वाणी में इतनी मधुरता थी जो उनके मुख से बोल सुनने की उत्सुकता बनी रहती थी कि कब वे प्रेरणादायी बोल बोलें। जब कभी वे भवन निर्माण की नींव लगातीं तो तुरंत ही स्नेह से कह देतीं कि भाई, भवन एक वर्ष में तैयार करके दो, बाबा के बहुत बच्चे आने वाले हैं, सबको सेलवेशन मिलनी चाहिए और सचमुच उनके बोल सिद्ध हो जाते। उनके बोल शीतल, सुखद और मनभावन होते थे जैसे कि मुख से फूलों की वर्षा हो रही है।

इकॉनामी की अवतार

दादी जी सदा कहतीं कि कोई भी कार्य कम खर्च बालानशीन हो। यज्ञ का एक-एक पैसा मोहर के समान है। गरीबों की पाई-पाई से यज्ञ चल रहा है। हर वर्ष भवनों को सफेदी करने के लिए कहतीं (सब भवनों को सफेद कपड़ा मिलना चाहिये), महंगा पेंट करने की बात उन्होंने कभी नहीं कही। यज्ञ के समर्पित भाई-बहनों के कपड़ों के लिए वे सम्मेलनों के बीच में सुनाती कि इन भाई-बहनों को पहनाया गया कपड़ा बहुत स्वच्छ, सुन्दर है पर यह बहुत सस्ते रेट से मंगाया हुआ, खादी का कपड़ा है। आने वाले लोग हैरान हो जाते कि यहाँ के भाई-बहनों की ड्रेस एक-सी कितनी सुंदर है। भले साधारण है पर इसमें पवित्रता, स्वच्छता, त्याग भाव की चमक दिखाई देती है। किसी भी कार्य में न बहुत साधारणता, न ऊँचा भभका हो बल्कि मध्यम हो, यह ध्यान वे ज़रूर रखती थीं।

स्वच्छता की देवी

मधुबन (शांतिवन) की स्वच्छता के लिए वे रोज क्लास के बाद चक्कर लगाती और चारों तरफ देखती। कहीं पर भी थोड़ा भी कूड़ा, कचरा, गंदगी देखती तो तुरंत निमित्त भाई को कह देती कि कल से ये सब दिखाई नहीं देना चाहिये। आज भी यहाँ की सुंदरता, स्वच्छता को देख लोग दंग रह जाते हैं क्योंकि यह तो है ही चैतन्य शिवालय जो स्वयं भगवान ने ब्रह्मामुख से स्थापन किया है। ऐसे चैतन्य

मंदिर की स्वच्छता के निमित्त थी दादी जी की आंतरिक रूहानी स्वच्छता।

सफेद ड्रेस का महत्त्व

क्लास में भी किसी के काले वस्त्र, मैले वस्त्र उनको पसंद नहीं आते थे। वे कहतीं कि बाबा की दी हुई, मर्यादायुक्त सफेद ड्रेस ही क्लास में पहन कर सब भाई-बहनें आयें, भले सर्दी है तो यज्ञ से मिली सफेद शॉल ओढ़कर बैठें। वे कहतीं, क्लास में श्वेत हंस ही नज़र आने चाहिएँ। यह क्लास फरिश्तों का क्लास नज़र आये जो कोई नया व्यक्ति आकर देखे तो उसे लगे कि यह तो दुनिया से न्यारी सभा है, हमारे कर्मों व अनुशासन के द्वारा आने वालों की सेवा हो जाये। वे कहतीं कि यदि कपड़ा रंगीन या काला है तो व्यक्ति दस दिन भी मैला पहनता रहेगा इसलिए ही तो बाबा ने सफेद यूनिफार्म पहनाई है ताकि स्वच्छता बनी रहे। कितनी महान थी उनकी यह सोच! वे जब अपनी कॉटेज से बाहर निकलती, लगता था कि कोई विश्व महाराजन आ रहे हैं। सबसे अधिक स्वच्छता तो उनके मन, वचन, कर्म की स्वच्छता थी। वाह! धन्य हुए हम जो ऐसी महान हस्ती को देखने का 25 वर्षों तक सुअवसर मिला। भाग्यशाली हैं ये नयन!

नम्रता की देवी

जब कभी भी कोई पद वाला, चाहे कम उम्र का, सामने होता तो वे बड़े सम्मान से बाबू जी कहकर हाथ जोड़कर अभिवादन करती थीं। फिर उनकी विशेषतायें भी बता देती, उनको भविष्य के लिए कोई प्रेरणा भी दे देती तथा यज्ञ सेवा से जोड़ देती थी। बड़े-बड़े साधु-संतों, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति से प्यार से हाथ जोड़कर, नम्रता से मिलती थी। उनके टोली (प्रसाद) खिलाने में भी दया-भाव, करुणा-भाव, रूहानी नशा स्पष्ट दिखाई देता था।

बच्चों की दादी

बच्चों के साथ बच्चा बनकर, उनके हाथ में हाथ देकर डांस भी कर लेती तो बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखकर, उनके उमंग-उत्साह को भी बढ़ा देती थी। फिर

शेष भाग पृष्ठ 19 पर

पुण्य स्मृति

ब्रह्माकुमार देवीचन्द कौशिक,
उत्तम नगर, दिल्ली

प्रकाश ज्ञान का, मणि-सी दीप्ति, हर्षित मुखड़ा पावन।
स्मृति दिवस पर याद आ रहा है वो सार्थक जीवन।।

यज्ञ-भवन की पंचम ईंटों में तुम न्यारी-प्यारी।
अन्तिम साँसों तक ढ़ोई है भारी जिम्मेदारी।।

ज्ञान, योग, धारणा, सेवा की तुम चेतन धारा।
ब्राह्मण कुल की पथप्रदर्शक, न्यारा आदर्श तुम्हारा।।

बच्चे, तुम मुझसे आगे, बाबा ने वचन सुनाये।
दादी, तुमने निज कर्मों से पूरे कर दिखलाये।।

शिव की महिमा आदिकाल से इतिहासों में गाई।
शिवशक्ति की महिमा निजकर्मों से खुद दर्शायी।।

देश, धर्म और जाति, रंग के बन्धन सभी भुलाये।
परमपिता से तुमने आत्माओं के तार जुड़वाये।।

महाद्वीप, सागर की लाँघी विशाल सीमा सारी।
भारत-संस्कृति की सुगन्ध फैलाई न्यारी-प्यारी।।

साधु, पंडित, ज्ञानी जो विरोध करते थे भारी।
नत हो गये, यही थी शिव की प्रदत्त शक्ति तुम्हारी।।

सिंधु जैसी गहन, भूमि-सी सहनशील तुम प्यारी।
विशाल मन बन, की ब्राह्मणों की, गिरि-सी पहरेदारी।।

मात-पिता-साथी का बाबा ने जो रोल बजाया।
पग-पग अपने जीवन में उसको तुमने दोहराया।।

शांतिदूत, संस्कृति-दूत, हे दिव्यदूत मनहारी।
अमर रहेगी सत्कर्मों की गाथा सदा तुम्हारी।।

प्यार, पालना, पथप्रदर्शन जो हमको मिला तुम्हारा।
उसका ऋणि रहेगा ये दैवी परिवार तुम्हारा।।

बनाएँ इन्द्रियों को दीर्घायु

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

मान लीजिए, हमारे हाथ में एक नरम और रसीला आम है। उसका रंग एकदम पीला, खुशबू अति उत्तम और एक टुकड़ा खाकर देखा तो पाया कि स्वाद लाजवाब है। हम हाथ में पकड़े आम को वहीं छोड़कर किसी अति आवश्यक कार्य से आगे बढ़ गए। तभी किसी का फोन आया, अरे, मैंने जो आम भेजे वो कैसे हैं? अब आम न हाथ में है, न सामने है, फिर भी हम उपरोक्त बात दोहरा देते हैं कि उसका रंग, खुशबू, स्वाद लाजवाब है और बहुत रसीला तथा नरम है। आम के रंग को देखने वाली आँखें, खुशबू लेने वाला नाक, स्पर्श करने वाले हाथ – तीनों इस समय आम से दूर भी हैं और अनबोल भी हैं फिर भी इनके द्वारा किए गए आम के अनुभव को कुछ समय बाद व्यक्त कौन कर रहा है? वास्तव में इन्द्रियों के माध्यम से संसार के पदार्थों के रंग, स्वाद, खुशबू आदि को पहचानने वाली, स्मरण रखने वाली, व्यक्त करने वाली आत्मा है। आत्मा के न रहने पर ये इन्द्रियाँ वैसे ही हो जाती हैं जैसे बिना करंट के कोई भी इलेक्ट्रिक डिवाइस हो जाता है। डिवाइस ठीक है पर काम नहीं कर रहा क्योंकि ऊर्जा का प्रवाह नहीं है। इसी प्रकार आत्मा की ऊर्जा से चलने वाली इन्द्रियाँ, उसके न होने पर निष्क्रिय हो जाती हैं।

शरीर रूपी कम्पनी की प्रबन्ध निदेशक है आत्मा

आत्मा की सूक्ष्म और स्थूल इन्द्रियाँ आत्मा के नौकर और चाकर हैं जो बाहरी जगत से सम्पर्क बनाते हैं। यदि हम किसी कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक से मिलना चाहें तो क्या वह द्वार पर ही बैठा मिल जाएगा? नहीं। द्वार पर तो द्वारपाल मिलेगा। अब शरीर को भी एक बड़ी कंपनी मानें तो इसकी प्रबन्ध निदेशक आत्मा भी बहुत अन्दर, बहुत ऊँचे और बहुत सुरक्षित स्थान भृकुटि के मध्य अन्दर की ओर हाइपोथेलेमस के एकदम नजदीक विराजमान है। इस स्थान की सुरक्षा के लिए प्राकृतिक रूप से खोपड़ी रूपी मोटा खोल बना हुआ है, जो शरीर के किसी भी अन्य अंग की भेंट में कई गुणा मजबूत है। अत: जब हम किसी व्यक्ति से मुलाकात करते हैं तो सामने-सामने तो आँख और मुख रूपी द्वारपाल ही मिलते हैं जो हमारे आने की सूचना और पहचान, गुप्त रूप में आत्मा तक पहुँचा देते हैं। अन्दर से आत्मा का सकारात्मक निर्णय आने के बाद ही वे हमारी मुलाकात को आगे बढ़ने का रास्ता देते हैं अन्यथा 'आज समय नहीं है' आदि-आदि वाक्य बोलकर मुलाकात को वहीं स्थगित कर देते हैं। इस प्रकार अमूल्य आत्मा गुप्त रहकर सारे अंगों का संचालन और संयोजन कुशलतापूर्वक करती रहती है। हमें भ्रम होता है कि शरीर ही सबकुछ कर रहा है परन्तु जड़ शरीर चेतना की शक्ति के बिना कुछ कर ही नहीं सकता।

आत्मा का स्थान सर्वोपरि

मानव शरीर की अलग-अलग कर्मेन्द्रियों को सम्मान के क्रम (प्रोटोकोल) के आधार पर अपना-अपना स्थान मिला हुआ है। इनमें राजा या मुखिया आत्मा का स्थान सर्वोपरि है। आत्मा के सबसे ऊपर होने का अर्थ है कि सब कार्यों में विचार की श्रेष्ठता रहे और मुख, जीभ... ये सभी

विचार के मार्गदर्शन में चलें।

आँखें पहुँचाती हैं 85 प्रतिशत सूचनाएँ

आत्मा के सबसे करीब हैं आँखें जो 85 प्रतिशत सूचनाएँ राजा तक पहुँचाती हैं और राजा की सोच क्या चल रही है उसकी झलक भी तुरन्त इन्हीं के द्वारा मिलती है। ये किसी भी भाव को छिपा नहीं सकती। अन्दर के भावों को एक दर्पण की तरह ज्यों का त्यों प्रकट कर देती हैं इसलिए आध्यात्मिक प्रकम्पनों द्वारा दूसरी आत्माओं या प्रकृति को सशक्त करने की सेवा की सर्वोत्तम साधन यही बनती हैं। आँखें हर इन्द्रिय के कार्य में सहयोगी हैं। जैसे हम खा रहे हैं तो कानों का कोई कार्य नहीं है पर आँखें तो तब भी कार्यरत हैं। हम हाथों से कोई भी कार्य कर रहे हैं, तब ना कान, ना मुख चाहिए पर आँखें तो चाहिएँ। इतनी महत्वपूर्ण आँखें आत्मा राजा की प्रधानमंत्री कही जा सकती हैं।

कान पहुँचाते हैं 15 प्रतिशत सूचनाएँ

कान 15 प्रतिशत सूचनाएँ आत्मा तक पहुँचाते हैं इसलिए इन्हें दूसरा स्थान दिया गया है। ये केवल बाहर का भीतर ले जाते हैं। कान दो होते भी एक ही कार्य करते हैं परन्तु मुख एक होते भी दो कार्य करता है, खाता भी है और बोलता भी है। मुख आत्मा का मुख्य प्रवक्ता है परन्तु आवश्यक नहीं कि यह ज्यों का त्यों उगले, कई बातों को छिपा भी लेता है, कइयों का रूप बदलकर भी बाहर प्रकट करता है, आँखों की तरह पारदर्शी नहीं है। इसलिए इसको स्थान दिया गया है सामने पर सबसे नीचे। आत्मा के करीब चेहरे पर इन तीनों (आँख, कान, मुख) इन्द्रियों को स्थान मिला है। इनसे थोड़े नीचे हैं हाथ जो कर्मचारियों की तरह इन तीनों द्वारा आवश्यक समझे गए कार्यों को क्रियान्वित करते हैं। ये लचीले हैं, कहीं भी पहुँच जाते हैं। ये आत्मा के आदेश से चोरी भी कर सकते हैं और दान भी। मिट्टी भी उठा सकते हैं और सोना भी। नौकर की तरह इनका कोई मान-अपमान नहीं है मात्र आदेश का पालन करते हैं। हाथों से काफी नीचे पाँवों को रखा है जो सारे शरीर का वजन उठाते हैं। ये भी लचीले हैं पर हाथों जितने नहीं। किस इन्द्रिय के ना होने से आत्मा राजा को कितनी तकलीफ हो सकती है, उसी आधार पर इनकी उपयोगिता और स्थान निर्धारित हुआ है।

जरूरत जितना प्रयोग करें इन्द्रियों को

हम सारा दिन अपनी इन इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं। यदि इनमें से एक भी बिगड़ जाए तो शरीर के कार्यों को सुचारु रूप से चलाना आत्मा को भारी पड़ता है इसलिए जितनी लम्बी शरीर की आयु हो, इन्द्रियों की आयु भी उतनी ही लम्बी हो, यह परम सौभाग्य है। इसके विपरीत यदि शरीर लम्बा चले और इन्द्रियों में से कोई एक या ज्यादा, साथ छोड़ दें, नाकाम हो जाएँ तो लम्बी आयु भारी पड़ जाती है। यदि किसी चीज को लम्बे समय तक चलाना हो तो हम उसकी थोड़ी-थोड़ी मात्रा प्रयोग करते हैं। इन्द्रियों का प्रयोग भी जरूरत भर के थोड़े समय के लिए करेंगे और इन्हें आराम देंगे तो ये लम्बी चलेंगीं।

आँख, कान, दाँत, हाथ, पाँव का सही प्रयोग

आँखों से उतना ही देखें जितना जरूरी है, गैरजरूरी दृश्यों को देखने में इनकी रोशनी खर्च न करें नहीं तो बड़ी उम्र होते-होते इनकी सारी रोशनी समाप्त हो जाने की पूरी सम्भावना है। कानों से भी उतना ही सुनें जितना अति आवश्यक है, गैर जरूरी और अत्यधिक ऊँची आवाज इनकी ग्रहण शक्ति को नष्ट कर देती है। फिर बढ़ी उम्र में मशीन आदि का सहयोग लेना पड़ता है, कई बार तो मशीनें भी नाकाम होने लगती हैं। मुख से उतना ही खाएँ और दांतों से उतना ही चबाएँ जितना शरीर के लिए अति जरूरी है। बिना जरूरत दाँतों से यदि हर वक्त कुछ न कुछ पीसते रहेंगे तो ये भी हिलने लगेंगे, टूटेंगे या दुखेंगे। बनावटी दाँतों से असली दाँतों जैसा सुख या स्वाद नहीं मिल पाता। बिना जरूरत का काम हाथों से ना करें (गैर जरूरी इशारे करना, किसी की तरफ उंगली उठाना, बैठे-बैठे हाथ हिलाते

रहना, चुटकियाँ बजाते रहना, घास तोड़ते रहना, पेन से टिक-टिक करते रहना और इसी प्रकार के अन्य व्यर्थ कर्म)। अगर हाथों को बिना जरूरत चलाएँगे तो बढ़ी उम्र में ये स्वत: चलने (हिलने) लगेंगे और पैरों पर भी शरीर के अनावश्यक रूप से बढ़े हुए वजन को उठाने की जिम्मेवारी न डालें, नहीं तो इनके घुटने भी जवाब देने लगते हैं।

जितना खर्च करें उससे ज्यादा भरें

उपरोक्त सत्यों के साथ-साथ इन्द्रियों के सम्बन्ध में एक सत्य और है। यदि सारे शरीर को एक टैंकर मानें तो इन्द्रियाँ इसमें लगे विभिन्न नल हैं जिनके माध्यम से इस टैंकर में भरा जल मानो खाली होता रहता है। जब-जब किसी भी इन्द्रिय का प्रयोग होता है तो भीतर की शक्ति का क्षरण होता है परन्तु जिस प्रकार हरेक टैंकर में ऊपर की ओर भी एक बड़ा छेद होता है जहाँ से उस को भरा जाता है। आत्मा ही सर्व इन्द्रियों से ऊपर एक मात्र कनेक्शन है जहाँ से शक्ति को भरा जा सकता है। यदि हम सारे दिन नल खोले रखें और टैंकर को भरने का समय ही न दें तो धीरे-धीरे नलों से कुछ भी बाहर नहीं निकलेगा, वे भी सूख जाएँगे। इसलिए जरूरी है कि जितना इन्द्रियों रूपी नलों से बहाएँ उससे ज्यादा आत्मा में शक्ति भरें।

आत्मा हो जाएँ

आत्मा में शक्ति भरने का आधार है परमात्मा पिता के साथ सम्बन्ध। यह सम्बन्ध जोड़ने से आत्मा शक्तियों से भरपूर हो जाती है और उस शक्ति को इन्द्रियों के माध्यम से संसार को वितरित करती है। यदि हम अमृतवेले परमात्मा पिता की याद के बल से अपने को भरपूर कर लें तो यह बल सारा दिन चलता रहेगा। दिन भर में बीच-बीच में समय निकालकर भी भरने का कार्य करते रहें तो दिन भर में कभी खालीपन महसूस नहीं होगा। इसके लिए भृकुटि में स्थित आत्मा के स्वरूप पर ध्यान एकाग्र करें और एकाग्र होते-होते आत्मा हो जाएँ। आत्मा हो जाने का अर्थ है, हमें लगने लगे कि मैं एक प्रकाश का बिन्दु मात्र हूँ और मेरे चारों ओर मेरे ही प्रकाश का घेरा है।

आनन्द में सराबोर हो जाएँ

अब इसी रूप की स्मृति के साथ उड़ान भरें और पाँचों तत्वों से पार ब्रह्मलोक में विराजमान अखण्ड प्रकाश के ज्योतिबिन्दु शिवबाबा के समक्ष उपस्थित हो जाएँ। प्यारे बाबा से निरन्तर प्रवाहित शक्तियों की घनीभूत किरणों से अपने को घिरा हुआ महसूस करें। इन शक्तिशाली किरणों को आत्मसात करते हुए महसूस करें कि ये शक्तिशाली किरणें, एक्स-रे की तरह मुझे भीतर से बदल रही हैं। मेरे भीतर की कमी-कमजोरियाँ नष्ट हो रही हैं, भीतर से मेरी धुलाई हो रही है। कालापन, दाग, धब्बे नष्ट होते जा रहे हैं और आत्मा का उजला-पन बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया का आनन्द लें। इस ईश्वरीय देन के प्रति कृतज्ञता भाव धारण करें। कुछ घड़ियों तक इसी आनन्द में सराबोर होते रहें और फिर सराबोर होने की अनुभूति के साथ धरा पर आ जाएँ। धरा पर आने के बाद भी ऊपर की अनुभूति चालू रहेगी, जो आत्मा को भरपूर होने का अहसास देती रहेगी।

रूहानियत की मूरत... पृष्ठ16 का शेष

बच्चों को इनामस्वरूप सौगात देतीं, गुलदस्ता देतीं, उनको गोद में लेतीं, चुम्बन करतीं जिससे हर बच्चा कहता कि देखा दादी हमसे कितना प्यार करती हैं।

दादी जी के प्यार को जिन्होंने भी पाया, जीवन भर भूल नहीं सकते। दादी जी के साथ बच्चे भी बड़े प्यार से फोटो खिंचवा सकते थे। वे निरहंकारी भाव से हरेक के साथ खड़ी हो जाती थीं। उनमें अभिमान का नामोनिशान नहीं था कि मैं 130 देशों में फैली संस्था की हेड हूँ। वे तो कभी-कभी प्यार से कह देती कि अपने को इंचार्ज समझना, बड़ा समझना, हेड समझना माना हेडेक (सिरदर्द) मोल लेना। वे कहतीं कि मैं तो सदा अपने को निमित्त समझकर चलती हूँ इसलिए ही सदा हलकी रहती हूँ।

उनकी खूबियों का वर्णन करते रहें तो लेखनी चलती ही रहे। उनकी तो हर बात ही निराली थी। ऐसी मीठी दादी माँ को हमारा बारम्बार नमन!!! ❖

मेरा स्वभाव शान्ति है

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम

जब मैं स्वयं को 'मैं' कहती हूँ तब मेरा ध्यान सर्वप्रथम शरीर पर जाता है कि यही मैं हूँ। फिर मैंने इस शरीर को ही 'मैं' समझ लिया। जैसे ही शरीर को 'मैं' समझ लिया तो पूरी सोच का आधार ही बदल जाता है क्योंकि शरीर आज है, कल बीमार हो जायेगा, बूढ़ा हो जायेगा, फिर समाप्त हो जायेगा तो क्या जीवन की यात्रा बस इतनी-सी है। फिर हम सोचते हैं कि मुझे इतने समय में ही सब कुछ कर लेना है और सब कुछ पा लेना है क्योंकि समय तेजी से बढ़ता जा रहा है।

अपने को शरीर समझने से हमारी संकल्प पद्धति एक अलग दिशा की ओर चली जाती है। राजयोग में हमें पहली समझ यह मिलती है कि मैं शरीर नहीं बल्कि एक ऊर्जा हूँ, शाश्वत हूँ, तो मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठता है। हमारी यह संकल्पना कि मैं आज हूँ, कल खत्म हो जाऊँगी, समाप्त हो जाती है।

जब मैं अपने आपको शरीर समझती थी तो जो पाने की बात थी वह भी शरीर से ही संबंधित होती थी। मुझे शारीरिक सुंदरता चाहिए क्योंकि मैं शरीर हूँ, शरीर को आराम चाहिए क्योंकि मैं एक शरीर हूँ, भौतिक साधन सारे होने चाहिएँ क्योंकि मैं शरीर हूँ।

फिर हम दूसरे की सुंदरता से तुलना करते हैं, दूसरों की चीजों के साथ तुलना करते हैं और सोचते हैं कि मुझे और चाहिए....और चाहिए। इससे हमारे अंदर तनाव पैदा होगा। जब तक 'मैं कौन हूँ' इसका सही उत्तर नहीं मिलेगा तो चाहिए...चाहिए...चाहिए...की सूची बदलती और बढ़ती जाएगी। अब जवाब आया कि मैं चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ तो मुझे जीवन में क्या चाहिए, शान्ति और खुशी। वास्तव में वो भी नहीं चाहिएँ क्योंकि वो तो अंदर पहले से ही हैं। तब हमारा सारा उद्देश्य ही बदल जाता है और हम जीवन को एक नए अंदाज से देखना और समझना शुरू कर देते हैं। तब हमें समझ में आता है कि जीवन सिर्फ 'जन्म और मृत्यु' के बीच में नहीं है। जीवन की यह यात्रा लगातार चलती रहती है जिसमें मैं एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर धारण करती हूँ और अपने साथ जन्म-दर-जन्म के अनुभव भी ले जाती हूँ।

जहाँ किसी ने शरीर छोड़ा हो वहाँ सभी के अंदर वैराग्य आता है और हम कहते हैं, देखो, अंतिम समय में अपने साथ क्या लेकर गया? सारा जीवन जिसकी होड़ में लगे थे, वो सब कुछ पीछे ही छोड़ दिया। एक चीज है जो साथ में जाती है, बाकी सब कुछ पीछे छूट जाता है। वह है मेरा एक-एक संकल्प, मेरा एक-एक कर्म जिससे संस्कार बन रहा है। ये सी.डी.है, इस पर जो-जो रिकॉर्ड हो रहा है,सिर्फ ये आगे जायेगी।

अब देखना है कि जो पीछे रह जायेगा वो महत्त्वपूर्ण है या मेरे साथ जो जायेगा वो महत्त्वपूर्ण है। मैं ऐसा नहीं कहती कि कर्म नहीं करो, कुछ इकट्ठा नहीं करो लेकिन ये याद रखते हुए करो कि जो साथ में जाना है उसकी गुणवत्ता क्या है। यहाँ हमने तनाव पैदा किया, गुस्सा किया, दर्द निर्मित किया, तो अंत में हमारे साथ क्या जायेगा? यही सब हमारे साथ में जायेगा। इसलिए हमें हर कर्म सोच समझकर करना है।

यदि हम किसी से झूठ बोलते हैं, धोखा करते हैं, एक-दूसरे को नीचा दिखाते हैं तो इससे आत्मा में क्या निर्मित हुआ। मैं स्वयं के लिये भी झूठ, फरेब और अहं निर्मित कर रही हूँ। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि कार्य करते हुए, शरीर

का ध्यान रखते हुए हमें यह नहीं भूलना है कि 'मैं कौन हूँ' और 'मैं' के ऊपर किसी भी गलत संस्कार, गलत संकल्प, गलत कर्म का प्रभाव न पड़ने दूँ।

जब भी कोई मुझसे पूछता था कि आपका स्वभाव क्या है तो मैं यही जवाब देती थी कि थोड़ा-थोड़ा गुस्सा आ जाता है, मैं बहुत सक्रिय हूँ, मैं बहुत भावुक हूँ, ये मेरा स्वभाव है। ये सारे स्वभाव तब आ जाते हैं जब हम स्वयं को नहीं जानते थे। जब स्वयं को ही नहीं जानते थे तो अपने वास्तविक स्वभाव को भी नहीं जानते थे।

स्वभाव का अर्थ है 'स्व' का 'भाव', तो 'स्व' को तो पहले जानना पड़ेगा। फिर 'स्व' के भाव को जानेंगे। जब हमें यह समझ में आ जाता है कि मैं आत्मा हूँ, तब मुझे ये भी समझ में आ जाता है कि मेरा स्वभाव क्या है।

आत्मा का स्वभाव है शान्ति, पवित्रता, प्यार, खुशी और शक्ति। ये सब हमें बाहर से नहीं चाहिएँ बल्कि ये सब मुझमें पहले से हैं। यही मेरा स्वभाव है। यह याद रखना बहुत जरूरी है कि मैं पहले से सुंदर हूँ, सम्पूर्ण हूँ, निश्चित हूँ, इसके लिए हमें बाहर से न कुछ खरीदना है, ना कुछ लेना है। जब हमें ये समझ में आ गया कि 'मैं आत्मा हूं' तो सुंदर बनने के लिए किस पर प्रयास करेंगे? आत्मा पर। मान लो यह संकल्प आता है कि मैं इनके जैसी सुन्दर नहीं हूँ। यह संकल्प है ईर्ष्या का, आलोचना का, दुख का, छोटेपन का। जैसे ही यह संकल्प किया तो किसकी सुंदरता पर दाग लग गया? इस तुलना से मैंने अपने आपको (आत्मा को) ही गंदा कर दिया।

हम शारीरिक सुंदरता पर सारा दिन ध्यान रख रहे हैं लेकिन जो 'मैं' हूँ उसकी सुंदरता पर ध्यान ही नहीं रखते। पहले हम यह समझते थे कि मुझे खुशी व्यक्ति से, साधनों से चाहिए। फिर हमारी ये अवधारणा खत्म हो जाती है क्योंकि समझ में आ गया कि मैं पहले से ही खुश हूँ, खुश रहना मेरा स्वभाव है, मुझे इसके लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना है। यदि सारा दिन हम इस संकल्प के साथ चलते हैं कि खुशी और शान्ति मेरा स्वभाव है तो पूरा दिन कैसा बीतेगा? बहुत अच्छा बीतेगा। ❖

त्याग फलता है, लोभ छलता है

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

किसी नगर में एक सेठ रहता था। उसके पास लाखों की सम्पत्ति थी। सम्पन्न होने के बावजूद वह बहुत लोभी था लेकिन उसकी पत्नी उदार प्रवृत्ति की थी, वह निर्धनों को दान देती तो सेठ बहुत आपत्ति करता था। पत्नी उसे समझाती कि देने से खजाना कम होने के बजाए और बढ़ेगा, इससे लोगों की दुआयें लगेंगी।

सेठ को पत्नी की बात गले नहीं उतरती थी। यदि सेठ के घर दरवाजे पर कोई मांगने आता तो वह डांटकर भगा देता। एक दिन उसके यहाँ एक साधु आया। साधु की आवाज में मानो एक जादू था जिससे प्रभावित होकर सेठ ने एक पैसा उसकी झोली में डाल दिया। साधु ने सेठ को दुआयें दी और भगवान का प्रसाद देकर चला गया।

शाम को जब सेठ ने प्रसाद की पुड़िया खोलकर देखी तो उसमें एक मोहर निकली। सेठ की खुशी का ठिकाना न रहा। एक पैसे के बदले सोने की मोहर! उसे अफसोस हुआ कि एक पैसे के स्थान पर यदि साधु को एक मोहर दी होती तो और अधिक धन की प्राप्ति होती।

अब सेठ साधु के फिर से आने की प्रतीक्षा करने लगा। साधु अगले दिन फिर आया। इस बार सेठ ने उसकी झोली में एक मोहर डाली। बदले में साधु प्रसाद देकर चला गया। सेठ ने जब पुड़िया खोली तो उसमें मात्र प्रसाद ही था। सेठ ने माथा पीट लिया। वह हाथ आई एक मोहर के गंवाने का दुख मनाने लगा। तब सेठ की पत्नी ने सेठ को समझाया, **'त्याग फलता है और लोभ छलता है।'** सेठ को अपनी गलती समझ में आ गई। सेठ ने स्वयं की सोच में सुधार किया अर्थात् नि:स्वार्थ भाव से देने की भावना मन में जागृत कर सबका भला करने लगा, लोभ को छोड़ दिया और सुखी हो गया। ❖

गतांक से आगे

त्याग व सेवा की मूरत माता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

थॉमस एल्वा एडिसन को उसके स्कूल से यह कह कर निकाल दिया गया था कि वह मंदबुद्धि है और उसे पढ़ाया नहीं जा सकता। एडिसन की मां ने उससे कहा कि मैं तुझे खुद पढ़ाऊँगी। माँ एडिसन को घर पर खुद पढ़ाने लगी और उसे किसी भी स्कूली छात्र से ज्यादा काबिल बना दिया। माँ को अपने बच्चे की मानसिक एकाग्रता व ग्रहणशक्ति का पता होता है और टीचर के रूप में माँ से ज्यादा योग्यता कोई बी.एड., एम.एड. शिक्षक भी नहीं दिखा सकता। शिक्षकों को तो ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है जिनकी शुरूआती बुद्धिमत्ता व समझ शक्ति का विकास उनके माँ-बाप ने 4-5 सालों तक किया हुआ होता है और बच्चा सीखने की उच्चत्तम अवस्था में उनके पास भेजा गया होता है परन्तु माता बच्चे को जन्म देकर उसे जो बुनियादी ज्ञान और जीवन की पढ़ाई पढ़ाती है वह तो शून्य-स्तर से शुरू होती है। चीन में एक कहावत है कि दुनिया में मात्र एक ही सर्वश्रेष्ठ सन्तान है और वह हर माँ के पास है। परन्तु यह कहना ज्यादा सही होगा कि दुनिया में एक ही सर्वश्रेष्ठ माँ है और वह हर सन्तान के पास है। ज्ञान की दृष्टि से देखें तो दुनिया में एक ही सर्व की माँ ब्रह्मा है और वह हर अनाथ मनुष्य को परमपिता परमात्मा शिव की गोद दिलवाने का कार्य करती है। सार में यूँ कह सकते हैं कि दुनिया में हर किसी को ईश्वर भले ही प्राप्त न हो परन्तु ईश्वर का प्रतिनिधि जरूर प्राप्त है जिसका लौकिक नाम है माँ और अलौकिक नाम है ब्रह्मा।

साधु की मन:स्थिति

स्वामी विवेकानन्द भारत के प्रथम संत थे जिन्हें पहली बार शिकागो में अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन में प्रवचन हेतु निमंत्रण मिला था। उस सम्मेलन से जो ख्याति व सफलता विवेकानन्द को विश्वपटल पर मिली, उसके पीछे

एक माता की शुभकामना का बल था। कुछ ही समय पहले उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस जी का निधन हुआ था अत: सम्मेलन में जाने के पहले विवेकानन्द ने मां शारदा से आशीर्वाद ले कर जाने का संकल्प किया। मां शारदा उस समय रसोई में भोजन बना रही थीं। उन्होंने कहा कि आशीर्वाद तो मैं सोच-समझ कर ही दूंगी, पहले तुम जरा वह चाकू उठा कर देना, मुझे सब्जी काटनी है। विवेकानन्द ने चाकू उठाया और विनम्रता से शारदा-मां की तरफ हाथ बढ़ा दिया। चाकू लेकर माँ ने कहा, जाओ नरेन्द्र, मेरे समस्त आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं। सफलता जरूर मिलेगी, इसमें मुझे जरा भी सन्देह नहीं। विवेकानन्द ने श्रद्धा से सिर झुका कर आशीर्वाद लिया और संकोच के साथ प्रश्न किया कि आपने आशीर्वाद देने से पहले क्या चाकू किसी खास प्रयोजन से मांगा था? माँ ने कहा, मैं तुम्हारे मन की स्थिति देखना चाहती थी। प्राय: जब भी किसी से चाकू मांगा जाता है तो वह मूठ से पकड़ कर धार वाला हिस्सा दूसरे को पकड़ाता है मगर तुमने चाकू की तेज धार अपनी हथेली में रखी और लकड़ी की मूठ मुझे पकड़ने को दी। एक साधु के मन की यही स्थिति है कि वह खुद जोखिम उठा कर भी दूसरे की सुरक्षा की सोचता है। तुम साधु वाले मनोभाव के हो, जाओ सफलता जरूर मिलेगी।

माता कम जानती है, ज्यादा समझती है

बुद्धिमत्ता पुरुषों की अपेक्षा माताओं में ज्यादा मालूम पड़ती है क्योंकि वे कम जानती हैं और ज्यादा समझती हैं। पुरुषों में किताबी व सांसारिक ज्ञान ज्यादा होता है और माताओं में व्यवहारिक ज्ञान व भावनात्मक समझ ज्यादा होती है। ज्यादा जानने से नहीं बल्कि ज्यादा अनुभवी होने से समझ बढ़ती है। स्मृति में दुनिया भर की बातों का जमाव बुद्धि को निष्पक्षता से काम नहीं करने देता। यदि माताएँ भी पुरुषों की तरह समाज की अच्छी-बुरी घटनाओं व संबंध-सम्पर्क के मकड़-जाल में बुद्धि को उलझा लें, तो सन्तान के प्रति उनकी वात्सल्य भावना वांछित स्तर पर नहीं रह पायेगी। यही कारण है कि घरेलू माताओं से जैसी पालना शिशुओं को मिलती है, कामकाजी महिलाओं व किट्टी पार्टियों में जाने वाली महिलाओं से वैसी पालना नहीं मिलती। कामकाजी माताएँ अपने शिशु को बेबी केयर सेन्टर पर छोड़ कर काम पर जाती हैं और शाम को घर लौटते समय उसे वहाँ से ले लेती हैं। भूतपूर्व इज्राइली प्रधानमंत्री गोल्डा मइर (Golda Meir) के अनुसार, कामकाजी माता की मन:स्थिति दो दिशाओं में हिचकोले खाती रहती है। कार्यस्थल पर माँ बच्चे के बारे में सोचती रहती है और बच्चे के साथ रहते हुए वह छुटे हुए कार्य के बारे में सोचती रहती है। इससे उसका हृदय बँट जाता है, जीवन सुखमय नहीं हो पाता।

माँ और शिशु–सच्चे मित्र

पैदा होने के बाद शिशु व मां का प्रथम दृष्टि मिलन (First Eye Contact) जीवन की एक महान घटना है। माँ उसे आँखों से कहती है, तुम मेरे हो और विस्मित शिशु माँ को टकटकी लगा कर इस भाव से देखता है कि यह मेरी है, मेरा संसार है। जिस प्रकार पेड़ की छाँव में बैठे मनुष्य को उस पेड़ से छाया, शीतल वायु और रसीले फल, सब कुछ प्राप्त होता है, उसी प्रकार माँ के आंचल में बच्चे को गुदगुदा बिस्तर, वांछित-तापमान, ममत्व भरी थपकी, मीठी लोरी और भूख लगने पर दूध, सब कुछ बिन मांगे प्राप्त होता है। वह जड़ खिलौने से तो बाद में खेलता है परन्तु माँ से खेलना पहले सीखता है। माँ को भी एक ऐसा चैतन्य खिलौना मिल जाता है, जैसा उसे अपनी बाल्य-अवस्था में नहीं मिला था। देखा जाए तो माँ व उसका शिशु, दोनों एक-दूसरे के सच्चे समर्पित मित्र होते हैं। शिशु पर कोई भी विपदा आ नहीं सकती क्योंकि माँ उसकी सारी विपदाएं अपने ऊपर ले लेती है। संसार में सभी प्राणी अपने जीवन से प्यार करते हैं परन्तु यह केवल माँ ही है जो अपने से ज्यादा अपने बच्चे को प्यार करती है। वह मौका आने पर अपने बच्चे की सुरक्षा हेतु खुद का जीवन दाँव पर लगा देती है। जापान में एक बार भयंकर भूकम्प ने भारी तबाही मचाई। जब भूकम्प शान्त हुआ तो बचाव दल के लोग एक खंडहर हो चुके मकान के अंदर गए। उन्होंने एक स्त्री के शव को देखा, जो कुछ मलबे पर इंद्रधनुष की तरह झुका था। उसकी कमर और सिर पर काफी चोटें दिखाई दे रही थीं। उसके शरीर को मृत देख कर जब बचाव दल दूसरी तरफ जाने लगा तो एक सदस्य को लगा कि शायद महिला के शरीर के नीचे कुछ है। उसने दूसरों को आवाज लगा कर बुलाया। सभी ने जब मलबे व उस महिला के शव को हटाया, तो कंबल में लिपटा हुआ तीन माह का बच्चा मिला जो सो रहा था और पूरी तरह सुरक्षित था। यह स्पष्ट था कि उस महिला ने बच्चे को बचाने के लिए अपना शरीर उसके ऊपर झुका दिया था। बच्चे के ऊपर एक सेलफोन रखा था जिसमें, अंतिम सांस लेते हुए उस महिला ने अपने बच्चे के लिए एक मैसेज लिखा था कि अगर तुम बच गए तो याद रखना, तुम्हारी माँ तुम्हें बहुत प्यार करती थी। बचाव दल के सदस्यों की आँखें छलक उठीं और उन्होंने उस सेलफोन को तब तक के लिए सहेज कर रखने का निश्चय किया, जब तब बच्चा कुछ समझने लायक बड़ा न हो जाए।

क्रमश:

भाग्यशाली वो नहीं होते हैं
जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है
बल्कि वे होते हैं जिन्हें जो मिलता है
उसे वे अच्छा बना लेते हैं।

दादीजी का हर कर्म प्रेरणादाई था

ब्रह्माकुमार सुरेश कुशवाहा, भिलाई

अतीत के झरोखों से बीते हुए लम्हों को देखता हूँ तो सबसे सुंदर व प्रफुल्लित कर देने वाले पल दादीजी के सामीप्य के हैं। उन्हें देखकर ही अथाह आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता था। उनके बोल सुनकर मन आनंद और उमंग-उत्साह से भर जाता था। परमात्म गीतों पर उनका डांस मन को ईश्वर के समीप ले जाता था। उनका चलना, देखना, दृष्टि देना, सबका कुशल-क्षेम पूछना, टोली देना, मुरली सुनाना.....सब कुछ निराला था। उनका हर कर्म देखकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलती थी।

न्यारी और प्यारी

उनके दिल में सदा मातृत्व का सागर लहराता रहता था। एक पल के लिए कभी भी, किसी ने उन्हें उदास, निराश नहीं देखा। सदा उमंग-उत्साह में उड़ते रहना और सर्व को उड़ाते रहना, यह उनका नेचुरल संस्कार था। पवित्रता तो जैसे उनके नैनों, चेहरे और सारे शरीर से प्रस्फुटित होती रहती थी। निरहंकारिता की तो जैसे वे देवी ही थीं। इतनी बड़ी संस्था की प्रमुख होते हुए भी उनकी भाषा कभी आदेशात्मक नहीं रही। सारा निर्देशन प्यार से करती थीं। बुद्धि इतनी दिव्य व निर्मल थी कि किसी भी बात का निर्णय एक सेकंड में ले लेती थीं। न्यारी और प्यारी इतनी थीं कि उन्हें देखकर, बनाने वाले भगवान की याद स्वत: आ जाती थी। दिल इतना विशाल जिसमें सारा विश्व समा जाये। प्रस्तुत हैं उनके साथ के कुछ प्रेरणादायी संस्मरण –

दिल की सच्ची भावना की महसूसता

बात लगभग 18 वर्ष पूर्व की है, ज्ञान सरोवर में यूथ फेस्टिवल का आयोजन किया गया था। मैं तीन युवाओं को

लेकर गया हुआ था जिनमें एक नामीगिरामी कलाकार और एक रोटरी क्लब के पदाधिकारी थे। अगले दिन दादीजी ज्ञानसरोवर के हारमनी हॉल में सब युवाओं से मिलीं। श्रेष्ठ कार्यों के लिए उन्हें बहुत उमंग-उत्साह दिलाया, हाथ खड़े करवाये कि यहाँ से जाकर भी आपमें से कितने राजयोग का अभ्यास करेंगे व विश्वसेवा में अपना योगदान देंगे? आधे से ज्यादा युवाओं ने हाथ खड़े किये। दादीजी ने कहा कि सभी को जाकर स्वपरिवर्तन से विश्वपरिवर्तन करने का योगदान देना है। फिर वातावरण कुछ ऐसा हो गया कि सबको दादीजी से शुभचिंतक माँ की भासना आने लगी। इसके बाद फोटो सेशन होना था। दादीजी के बीच में बैठते ही सभी युवाओं में उनके आस-पास बैठकर फोटो खिंचवाने की होड़ मच गई। मेरे युवा साथी भी इस होड़ में शामिल थे लेकिन उनके व दादीजी के बीच 5-6 लोग और बैठ गये थे। वे बार-बार दादीजी के पास जाने का प्रयास करते लेकिन सफल नहीं हो पा रहे थे। अचानक दादीजी ने उनको देखा तो उनके दिल की सच्ची भावना को महसूस कर लिया तथा अपने पास बुलाकर बिठा लिया व फोटो खिंचवाया। बाद में कलाकार भाई ने बहुत खुशी से यह घटना मुझे बताई। मैं तो यह बात सुनकर ही गद्‌गद् हो गया और दादीजी के प्रति बहुत श्रद्धा हुई कि वे सबका कितना ख्याल रखती हैं। मेरे कलाकार साथी आज भी उस घटना

को याद कर दादीजी के प्रेम के प्रति रोमांचित हो जाते हैं। फिर सेंटर पर आकर भी वे सहयोगी बने रहे।

निर्माणता की मूर्त

जब दादीजी ने नश्वर देह का त्याग किया तब अंतिम संस्कार से पूर्व देह को एक ट्रक पर सजाकर, शांतिवन से पाण्डव भवन (माऊण्ट आबू) ले जाया जा रहा था। हम कुछ भाई-बहनें भी प्राइवेट टैक्सी लेकर पाण्डव भवन के लिए चल पड़े। मैं ड्राइवर भाई के बगल में बैठा था तो अनायास ही उससे पूछ लिया कि क्या आप दादी प्रकाशमणिजी को जानते हो? उनसे कभी मिले, जिनके अन्तिम दर्शन के लिए हम सब जा रहे हैं? उसने एक अद्‌भुत बात बताई कि मुझे यहाँ आये हुए तीन वर्ष ही हुए हैं। मैं शांतिवन के बाहर एक दिन अपनी टैक्सी पोंछ रहा था तो एक बुजुर्ग महिला धीरे-धीरे शान्तिवन से बाहर आई, मेरे पास आकर खड़ी हो गई और पूछा, भैया, आप ठीक हो? मैं उनके दिव्य मुख को देखते हुए सोच ही रहा था कि ये कौन हैं, इतने में, आस-पास के अन्य टैक्सी ड्राइवर दौड़कर पास आ गये और दादीजी के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। दादीजी ने सबका हाल समाचार पूछा और वापस चली गईं। उनके जाने के बाद सभी ने बताया कि यही संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी हैं। मैं तो दंग रह गया। इतनी बड़ी संस्था की प्रमुख और इतनी निर्मान! अकेले ही पैदल बाहर आ गईं। हम जैसे गरीब लोगों के लिए भी उनके मन में कितना प्यार है! मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा भी कोई इंसान हो सकता है!

आगे बढ़ाने में सदा तत्पर

ऐसी ही एक अन्य घटना है, जब दादी जानकीजी व बड़ी दादीजी डायमंड हॉल की स्टेज पर लगभग 20,000 भाई-बहनों के सम्मुख चिटचैट कर रहे थे। दादी जानकी जी ने पूछा कि दादी, आप क्या जादू करती हो जो थोड़ी ही देर में इतनी बड़ी सभा को (सभी को) अपना बना लेती हो? दादी तो मुसकराकर रह गईं लेकिन मुझे महसूस होता है कि वे स्वयं को जगत् की माता अनुभव करती थीं व सर्व को आगे बढ़ाने में सदा तत्पर रहती थीं। उनके निर्मल, निश्छल, निस्वार्थ प्रेम तथा शुभभावना के बायब्रेशन्स सबको उनकी ओर आकर्षित करते थे। दादी जानकी जी से भी उनका बहुत रूहानी प्रेम था। जब दादी जानकी जी लंदन में होती थी तो दादी जी रोज सोने से पूर्व रात को एक बार उनसे फोन पर कुशल-क्षेम जरूर पूछती थी। शांतिवन में होने पर तीनों दादियां साथ में ही भोजन करती थीं।

आज भी जब मैं दादीजी को याद करता हूँ तो उनके अव्यक्त बायब्रेशन स्पष्ट महसूस होते हैं और उनके जैसी अखण्ड़ महादानी, पालनहार, बापसमान स्टेज का सहज अनुभव होता है। ❖

उपहार आपका है बाबा

ब्रह्माकुमार मदनलाल,
हनुमानगढ़ी-छिबरामऊ-कन्नौज (यू.पी.)

मैं लाख कहूँ तन मेरा है, उपहार आपका है बाबा।
साँसें लेने को मैं लेता, अधिकार आपका है बाबा।।

रिश्ते झूठे, नाते झूठे, है झूठा सबका प्यार यहाँ।
वैभव झूठा, यश भी झूठा, झूठा सारा संसार यहाँ।
इन झूठों में केवल सच्चा दरबार आपका है बाबा।।

जितने बन्धन बाँधे हमने, कुछ रूठ गये, कुछ टूट गये।
जो शेष बचे वो इक-इक कर, मेरे ही सम्मुख छूट गये।
जो किया आपने मोहभंग, उपकार आपका है बाबा।।

पहले भी हम जीते थे पर, जीने वाली कुछ बात न थी।
बस जाती यादों में मेरी, ऐसी कोई प्रभात न थी।
तुमने बदला इस जीवन को, आभार आपका है बाबा।।

मैं नहीं समझता था पहले, ये जीवन मैंने क्यों पाया।
जब तुमने अपना ज्ञान दिया, तब भेद समझ में ये आया।
हूँ आज जहाँ मैं खड़ा हुआ, आधार आपका है बाबा।।

कामिनी नहीं, कल्याणी

ब्रह्माकुमारी ऋतु, छतरपुर (म.प्र.)

नारी को सृष्टि की सर्वोत्तम कृति कहा गया है। ईश्वर व प्रकृति के समान, नया जीवन देने तथा पालना करने का विशेष वरदान नारी को प्राप्त है। जननी होने की विशेष क्षमता के कारण वह शारीरिक संरचना में पुरुष से कुछ भिन्न है। जीव विज्ञान के अनुसार नारी में शिशु को धारण करने तथा इसे विकसित करने का विशेष अंग गर्भाशय होता है। यह अंग आकार में बड़ा होता है ताकि इसमें शिशु पूर्ण विकसित रूप ले सके। यह एक अतिरिक्त अंग शरीर में काफी स्थान घेरता है। मानव शरीर में फेफड़ों के नीचे तथा अमाशय के ऊपर एक पट्टा होता है जिसे डायफ्राम कहते हैं। सांस लेते समय यह जितना अधिक ऊपर-नीचे गति करता है, फेफड़े उतनी अधिक आक्सीजन ग्रहण करते हैं तथा शारीरिक कार्यक्षमता भी बढ़ती है। नारी के शरीर में गर्भाशय के स्थित होने के कारण यह डायफ्राम पुरुषों की अपेक्षा कम ऊपर-नीचे फैल पाता है ताकि गर्भाशय तथा उसमें पल रहे शिशु को क्षति न हो। इस कारण उसके फेफड़ों की, आक्सीजन लेने की क्षमता कुछ कम होती है। इसका लगातार तेज भागने-दौड़ने, ज्यादा वजन उठाने आदि शारीरिक क्रियाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसी कारण वह शारीरिक बल में पुरुषों से कुछ कम है।

आर्थिक मूल्य के बिना कार्य कर दिए गए अर्थहीन

परन्तु हम देखते हैं कि उपरोक्त कारण के बावजूद भी नारी ने विभिन्न खेलकूद व साहसिक कार्यों में पुरुषों की बराबरी के कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उसने सिद्ध कर दिया है कि मेरी शारीरिक भिन्नता मेरा भाग्य नहीं है (My biology is not my destiny)। शारीरिक बल में भले ही नारी, पुरुषों से कुछ कम हो सकती है किंतु आध्यात्मिक रूप से प्रेम, सहनशीलता, धैर्य, समन्वय, सहानुभूति जैसे विशेष गुणों की धनी होने के कारण वह पुरुषों की अपेक्षा अधिक सशक्त है। इसलिए देवी के विभिन्न रूपों में उसकी पूजा हो रही है। वह मां के रूप में प्रथम गुरु है। व्यवस्थित रखने, संभालने, सहेजने आदि दिव्य गुणों के कारण सामाजिक कार्य-विभाजन में उसे घर संभालने और बच्चों के पालन-पोषण की विशेष जिम्मेवारी मिली। सारा दिन पुरुषों की तुलना में अधिक काम करने के बाद भी, इन कार्यों का आर्थिक मूल्य प्राप्त न होने के कारण उसके कार्य महत्वहीन कर दिए गए। आज, पूरे घर का पालन-पोषण करने वाली वह स्वयं कुपोषण का शिकार है। संसार की जननी होने के बाद भी भ्रूणहत्या तथा कन्या-वध के कारण संसार में आने के लिए संधर्ष कर रही है। घर की लक्ष्मी कहलाने वाली नारी को दहेज के लिए जला दिया जाता है। ज्ञान की देवी सरस्वती व शक्ति की देवी दुर्गा के रूप में पूजी जाने वाली नारी स्वयं अशिक्षा, बलात्कार आदि अत्याचारों का सामना कर रही है।

दूसरी ओर, नारी का एक स्वरूप यह भी देखा जा रहा है कि वह आध्यात्मिक श्रेष्ठता को भूलकर फैशन, गपशप, दिखावा, चारित्रिक पतन के दलदल में धंसकर भोगविलास की गुड़िया बन गयी है। शीघ्र नाम-मान-प्रसिद्धि, धन आदि प्राप्त करने के लिए उसने अपने चरित्र और शील का सौदा कर लिया है। कुछ महिलाओं के इस स्वार्थ ने समस्त नारी जाति की छवि धूमिल कर दी है। सुंदर दिखने की होड़ व आधुनिकता के भ्रम में अश्लील पहनावे द्वारा

पुरुषों की विकारी वृत्ति को उत्तेजित कर उसने समस्त नारियों की लाज को खतरे में डाल दिया है।

आध्यात्मिक प्रयास आवश्यक

नारी सुरक्षा के लिए कानूनी स्तर पर तथा विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा नारी सशक्तिकरण के प्रयास किये जा रहे हैं। इनमें जूडो-कराटे सिखाना, पुलिस सहयोग की विशेष व्यवस्था आदि प्रमुख हैं। इन सब के बावजूद भी स्थिति नहीं बदली क्योंकि इन बाह्य प्रयासों के साथ [illegible] [illegible] लोगों के मन में हमारे प्रति भावनाएं निर्मित करते हैं। यदि हम बाहर की स्थितियों में परिवर्तन करना चाहते हैं तो पहले हमारे भीतर परिवर्तन चाहिए। यदि नारी, देहभान में रहकर यह सोचे कि मैं युवा हूँ, सुंदर हूँ तो उसके संपर्क में आने वालों की दृष्टि, वृत्ति भी विकृत होती है। यदि वह **आत्मिक स्मृति में स्थित होकर सोचे कि मैं सर्वशक्तिवान ईश्वर की संतान, दिव्य गुणों से संपन्न शिवशक्ति हूँ तो लोग उसे दैहिक रूप में न देख सम्मान की भावना से देखेंगे जैसे कि देवी की मूर्ति बहुत सुंदर और युवा रूप की होने पर भी सभी उसे माँ की श्रेष्ठ नजर से देखते हैं।** श्रेष्ठ सोच आत्मबल बढ़ाने के साथ ही बोल और व्यवहार में दिव्यता लाती है तथा व्यक्तित्व को सादगी व सद्गुणों से सजाती है।

सृष्टि परिवर्तन का आधार नारी

कहा गया है, **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।** जहां नारी का सम्मान होता वहां देवता निवास करते हैं। जब नारी अपनी दिव्यता, सच्चरित्रता और गुणवान स्थिति में होती है तब समाज भी दैवी मूल्यों से संपन्न होता है। जिसके हाथों में झूले की रस्सी है वही संसार परिवर्तन कर सकती है। सृष्टि परिवर्तन का दिव्य कार्य [illegible] [illegible] [illegible] है। अब उसे घूंघट की नारी नहीं बल्कि घट-घट की नारी अर्थात् विश्व के कोने-कोने में प्रभु संदेश देने वाली आध्यात्मिक क्रांति का अग्रदूत बना दिया है। नारी ने द्वापरयुग से बहुत अत्याचार सहन किये। उसे पशु समान तथा उपभोग की वस्तु के स्तर तक गिराया गया। अब विश्वकल्याणकारी शिवपिता ने उसका भाग्य जगाया है। अपने विश्व परिवर्तन के महान कार्य में उसे अग्रणी भूमिका प्रदान की है। नर्क का द्वार कही जाने वाली नारी को ही स्वर्ग का द्वार खोलने के निमित्त बनाया है। सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति नारी को अब शिवपिता का यही संदेश है, 'हे नारी तू कामिनी नहीं, कल्याणी बन।' ❖

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें पोस्ट द्वारा या ई-मेल **gyanamritpatrika@bkivv.org** पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

वैश्विक प्रेम के प्रतीक 'रक्षाबंधन पर्व' तथा सतयुगी दुनिया के महाराजकुमार श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव 'जन्माष्टमी' पर्व की पाठकगण को कोटि-कोटि बधाइयाँ

हिम्मत का एक कदम हमारा, मदद के हजार कदम बाबा के

– ब्रह्माकुमार देशराज, सरकाघाट (हि.प्र.)

मेरा जन्म एक साधारण गरीब परिवार में हुआ। बचपन में ही मात-पिता का साया सिर से उठ गया। इसके बाद जीवन बहुत संघर्ष से बीतने लगा। कॉलेज में पढ़ाई करने के दौरान एक दिन मेरी मुलाकात एक ब्रह्माकुमार भाई जी से हुई। वो मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम लेकर गए। आश्रम पर जाते ही ऐसा लगा जैसे कि मैं अपने बिछुड़े हुए परिवार से पुन: मिल गया हूँ। इसके बाद ज्ञान-योग का अभ्यास नियमित रूप से करने लगा। एक बार बाबा ने ज्ञान-मुरली में कहा, "बच्चे, तुम हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ तो मैं हजार कदम मदद के तुम्हारी तरफ बढ़ाऊँगा।" बाबा की इस बात ने मेरे जीवन को सम्पूर्ण परिवर्तित कर दिया।

भोजन की सुविधा

पढ़ाई पूरी होने के बाद मुझे एक कम्पनी में नौकरी मिल गई। नौकरी के लिए तामिलनाडू जाना पड़ा। वहाँ खाने-पीने की बहुत समस्या आई। कम्पनी की तरफ से एक होटल में ठहराया गया था, होटल में खुद खाना नहीं बना सकता था। मैंने चावल और दही के साथ गुजारा करना शुरू कर दिया। एक बार एक अन्य होटल में मैं दोस्तों के साथ खाना खाने के लिए बैठा। होटल मालिक ने कहा, यहाँ चावल-दही नहीं हैं। मैंने कहा, बिना प्याज-लहसुन वाली कोई दूसरी चीज दे दो। उसने खाना परोस दिया। मैं बाबा को याद कर भोजन को दृष्टि देने लगा। अचानक महसूस हुआ कि मेरा हाथ बहुत भारी-सा हो गया है मानो किसी ने हाथ पकड़ लिया हो। काफी देर तक संकल्प आये कि मुझे यह भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए। बाबा को कहा, बाबा, आज दिन तक तो कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ, आज पहली बार क्यों ऐसे संकल्प चल रहे हैं? इतने में एक दोस्त आया, मुझे उठाकर बाहर ले गया और कहा, भगवान का शुक्र है, आपने यह भोजन ग्रहण नहीं किया, यह तो माँसाहारी भोजन (Nonveg.) है। यह सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए कि कैसे बाबा ने मुझे पतित भोजन को ग्रहण करने से बचा लिया। तब मैंने बाबा से दृढ़ प्रतिज्ञा की, बाबा, प्राण भी तन से निकल जायें पर मैं इस प्रकार से भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। बाबा की कमाल देखिए, उसके बाद मैं नौकरी करते हुए डेढ़ वर्ष आश्रम पर ही रहा। तब से लेकर आज दिन तक जहाँ भी जाता हूँ, बाबा के सेवाकेन्द्रों पर रहने का सौभाग्य मिल जाता है और खाने-पीने की समस्या नहीं आती है।

खोई हुई फाइल मिली

एक बार चेन्नई घूमने के लिए हम कई दोस्त एक ऑटो में निकले। ऑटो से उतरते समय मैंने अपना बैग, जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज (Imp. Documents) थे, ऑटो में ही छोड़ दिया। थोड़ी देर के बाद जब याद आया तो होश उड़ गए कि डाक्यूमेन्ट फाइल तो ऑटो में ही रह गयी। ऑटो वाला वहाँ से जा चुका था। हम पुलिस के पास गए लेकिन ऑटो वाले की कोई पहचान न होने के कारण पुलिस ने भी मदद देने से इन्कार कर दिया। मैंने मन ही मन बाबा को याद किया। तभी अचानक ऑटो वाला वापस उसी चौराहे पर आया और मुझे मेरी खोई हुई फाइल वापस मिल गई।

हर कार्य लगने लगा सहज

सन् 2006 में पहली बार मधुबन में प्यारे बापदादा से मिलना हुआ। लौकिक मात-पिता के शरीर छोड़ने के बाद मुझे लगता था कि भगवान ने मेरा सब कुछ छीन लिया लेकिन ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद मुझे अनुभव हुआ कि

कल्प के बिछुड़े हुए सच्चे पारलौकिक मात-पिता मिल गये, इसलिए अब मुझे सब कुछ मिल गया। ईश्वरीय ज्ञान में चलने के बाद मुझे सब कार्य सहज लगने लगे। मैंने अपनी पढ़ाई का खर्च खुद किया। सुबह उठकर अखबारें बांटना, कॉलेज जाना, ट्यूशन पढ़ाना और रोज आश्रम पर जाकर मुरली सुनना – मेरी दिनचर्या के हिस्से थे। वर्तमान समय मैं राजस्व विभाग में पटवारी के पद पर कार्यरत हूँ।

मैं अपने को बहुत-बहुत भाग्यवान समझता हूँ कि पिछले 10 वर्षों की इस अलौकिक यात्रा में प्यारे बाबा ने हर कदम पर साथ निभाया। मैं प्यारे बाबा का और समस्त दैवी परिवार की महान आत्माओं का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने नि:स्वार्थ स्नेह देकर, मार्गदर्शन करके सदा आगे बढ़ाया और पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा दी। ❖

ईश्वरीय ज्ञान से आन्तरिक सशक्तिकरण

ब्रह्माकुमारी प्रीति खत्री, मालवीया नगर, जयपुर

मेरा जन्म आदीपुर (जिला-कच्छ, राज्य गुजरात) में नौ भाई-बहनों में छठे नंबर की संतान के रूप में अति संस्कारवान, शिक्षित, स्नेहयुक्त एवं कर्म सिद्धांत पर चलने वाले माता-पिता के घर हुआ।

मेरे लौकिक युगल (श्री मुरलीधर) का 29-05-1990 में 35 वर्ष की अल्पायु में एक दुर्घटना में देहान्त हो गया। उसी दिन ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन एवं ब्रह्माकुमारी सुषमा बहन (मालवीया नगर, जयपुर) ने घर आकर ईश्वरीय ज्ञान का बीजारोपण किया। दूसरे दिन से मेरे साथ-साथ परिवार एवं रिश्तेदारों को भी साप्ताहिक कोर्स करवाया। इस तरह लौकिक मुरलीधर का साथ छूटा और अलौकिक मुरलीधर का साथ मिला। ईश्वरीय ज्ञान में आगे बढ़ने में मेरे लौकिक देवर एवं मेरी बड़ी बहन पूनम का भी सहयोग रहा।

पति के स्थान पर सरकारी नौकरी मिली। अपने छोटे बच्चों की पढ़ाई की जिम्मेवारी एवं उक्त अकाले मौत की घटना से उबरने में मुझे काफी समय लगा एवं समय की कमी के कारण मैं सेवाकेन्द्र पर सप्ताह में केवल सतगुरुवार एवं रविवार को ही जा पाती थी किन्तु जुड़ाव बहुत हो गया था। कुछ समय बाद एक चुनौती ऐसी आई कि मैं प्रतिदिन क्लास करने लगी और बाबा की शक्ति से चुनौती को पार भी कर गई। ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करने के मुझे कई व्यवहारिक लाभ हुए, जो निम्नलिखित हैं –

अकेले होने का अहसास खत्म हो गया। जीने की इच्छा, जो खत्म हो रही थी, पुन: जाग उठी ताकि मैं अन्य आत्माओं को बाबा का परिचय दे सकूँ। प्रेम, सच्चाई, सफाई, निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण भावना इत्यादि गुण पहले से ही थे जिन्हें अलौकिक जीवन एवं परिवार में अपनाया और काफी सदुपयोगी रहे।

पीहर पक्ष एवं ससुराल में सदा सूई-धागे का काम किया, अपवाद की स्थिति को छोड़ते हुए हर बार सफल रही। मेरी दो प्यारी-सी सुयोग्य पुत्रियाँ हैं। परोक्ष-अपरोक्ष रूप से दोनों मुझे बाबा के हर कार्य में एवं जीवन के हर सुख-दुख में सहयोग करती हैं। आज मैं और मेरी दोनों पुत्रियाँ महिला सशक्तिकरण की जीती-जागती मिसाल हैं जो बिना किसी का अहित किये एक इज्जतदार एवं शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं, जो कि ज्ञान की बदौलत ही संभव हुआ है।

सर्व माताओं-बहनों के प्रति यही शुभभावना है कि वे नजदीकी सेवाकेन्द्र से ज्ञान-अंजन प्राप्त करें और स्वयं को अधिक से अधिक विश्वकल्याणकारी एवं शक्तिशाली बनाकर बाबा को प्रत्यक्ष करें। समाज से कह दें, 'मेरी क्षमता को देखो और मुझे अपने लिये स्वयं रास्ता बनाने दो और आगे बढ़ने दो, तुम बस मेरे साथ-साथ चलो, न आगे, न पीछे-पीछे।' ❖

शिवबाबा से सुप्रीम सर्जन का सम्बन्ध

ब्रह्माकुमार राजेन्द्र सिंह तोमर, शालीमार गार्डन, गाजियाबाद (उ.प्र.)

मेरे शरीर की आयु 68 वर्ष है। ज्ञान-मार्ग पर चलते हुए 21 वर्ष हो चुके हैं। शक्ति नगर, दिल्ली से ज्ञान मिला है। सात दिन का कोर्स पूरा करने के बाद ही निश्चयबुद्धि बन गया। आरम्भ में ज्ञान के साथ-साथ ब्रह्माकुमारी बहनों की व विशेष रूप से भ्राता जगदीश जी की आत्मिक स्नेह सम्पन्न पालना बहुत अच्छी लगी। अमृतवेला करना, मुरली जरूर सुनना, कम से कम एक आत्मा को बाबा का परिचय देने का लक्ष्य रखना, पवित्र रहना, सर्व को मनसा, वाचा, कर्मणा सुख देना, सर्व प्रति शुभभावना रख बाप से कल्याण करने की कामना करना, अन्न व संग की सम्भाल करना, बाबा को गुडमार्निंग व गुडनाइट करना तथा सच्चा पोतामेल देना – इन सभी मुख्य बातों पर प्रारम्भ से ही विशेष अटेन्शन देना शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि आज ये सब बातें मेरी नेचर बन गयी हैं।

निरहंकारी व मोहजीत

ज्ञान में आने से पहले अहंकार व मोह, ये दो विकार मुझे बहुत तंग करते थे। अहंकार को जीतने के लिए 'मैं विश्व सेवाधारी आत्मा हूँ" और मोह को जीतने के लिए, "मैं निमित्त हूँ" इन दोनों स्वमानों के निरन्तर अभ्यास द्वारा मैं सहज ही निरहंकारी व मोहजीत बन गया।

सम्बन्ध बने मधुर

ज्ञान में आने से पहले मेरे साथ जो जैसा व्यवहार करता था उसके साथ मैं भी वैसा ही व्यवहार करता था परन्तु अब मैं यह नहीं देखता कि सामने वाला कैसा व्यवहार कर रहा है। अब मैं एक सेकण्ड के लिए स्वयं को आत्मिक स्मृति दिलाता हूँ और स्वयं से पूछता हूँ कि क्या मेरा यह व्यवहार सामने वाले को अच्छा लगेगा या नहीं? यदि उत्तर हाँ में होता है तो वह व्यवहार करता हूँ, नहीं तो स्वयं शान्त रहकर बाबा से उस व्यक्ति के लिए कल्याण की कामना करता हूँ। इस अभ्यास से सभी (लौकिक, अलौकिक) के साथ मेरे सम्बन्ध मधुर बन गये हैं। सदा यही अनुभूति रहती है कि मैं सबका हूँ और सब मेरे हैं।

निमित्त भाव

ज्ञान में आने के बाद निश्चय बुद्धि होने के कारण मैंने स्वयं को, स्वयं की प्राप्तियों को, स्वयं की जिम्मेवारियों तथा समस्याओं को मन व बुद्धि से शिवबाबा को सौंप दिया और निमित्त (ट्रस्टी) बन गया। समय प्रमाण हर कार्य करावनहार की स्मृति में रहकर किया जिससे सभी प्रकार की जिम्मेवारियाँ व समस्यायें सहज ही हल होती गयी।

योग का प्रयोग

घटना सन् 1998 की है। दुर्घटना में मेरे शरीर की दायीं ओर की सभी पसलियाँ (रिब्स) टूट गयी थी। उस दिन मेरा रक्तचाप (बी.पी.) 120-180 एम.एम./एच.जी. अर्थात् नीचे का 120 एम.एम./एच.जी. और ऊपर का 180 एम.एम./एच.जी. पहुँच गया था। उसी दिन की मुरली में बाबा ने कहा कि बच्चे सर्व सम्बन्धों से मुझे यूज नहीं करते इसलिए कन्फ्यूज रहते हैं। मैंने सोचा कि आज मैं शिवबाबा को सुप्रीम सर्जन के सम्बन्ध से यूज करता हूँ। मैंने बाबा से कहा, बाबा, आप मेरे सुप्रीम सर्जन हो, नीचे आओ और अपने बच्चे का रक्तचात (बी.पी.) सामान्य करो। जैसे ही यह कहा, मुझे अनुभव हुआ कि विशेष शक्ति का संचार मुझ आत्मा और मेरे शरीर में हो रहा है तथा मैं स्वयं को पहले से शक्तिशाली व स्वस्थ अनुभव करने लगा। मैंने डॉक्टर साहब से कहा, कृपया मेरा रक्तचाप पुनः माप दें। उन्होंने मापा और आश्चर्य में पड़ गए कि कैसे इतना उच्च रक्तचाप सामान्य हुआ। जब डॉक्टर साहब ने बताया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं इतना अधिक खुश इसलिए नहीं था कि रक्तचाप सामान्य हो गया बल्कि

इसलिए था कि मैंने उस भगवान को, जिसे दुनिया ढूँढ़ रही है, यूज करना सीख लिया और अनुभवीमूर्त बन गया।

आप फरिश्ते हो

इसके बाद डॉक्टर साहब ने एक महीने के लिए आराम करने की सलाह दी परन्तु एक सप्ताह बाद ही महसूस हुआ कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैंने उनसे ड्यूटी पर जाने की अनुमति माँगी तो उन्होंने मना कर दिया परन्तु फिर भी मैंने ड्यूटी पर जाना शुरू कर दिया। एक महीने बाद जब एक्स-रे पुनः हुआ तो डॉक्टर साहब कभी एक्स-रे को देखें और कभी मेरी ओर देखें। मैंने पूछा, कोई गड़बड़ है क्या? डॉक्टर ने कहा, हाँ, गड़बड़ है, अपने 25 वर्षों के अनुभव में मैंने इतनी अच्छी तरह से हड्डियों को जुड़ते हुए कभी नहीं देखा है और उनके मुख से अनायास ही ये शब्द निकले कि तोमर साहब, आप इन्सान नहीं हो, फरिश्ते हो। मैंने उनसे कहा कि भगवान हमें यही तो बनाना चाहता है। फिर मैंने उन्हें बाबा का परिचय दिया।

मेरा अनुभव है, रक्तचाप माप कराने से पहले एक संकल्प करें, 'मैं ब्लिसफुल और पावरफुल आत्मा हूँ तथा मेरा बी.पी.सामान्य ही आयेगा।' अधिकतर भाई-बहनें बताते हैं कि ऐसा अभ्यास करने से हमारा बी.पी.सदा सामान्य रहता है।

अन्त में सभी भाई-बहनों को यही शुभ संदेश देना चाहूँगा कि सदा हर कर्म इसी स्मृति में रहकर करें कि मैं आत्मा सदा ही शिवबाबा के साथ कम्बाइन्ड हूँ और वह करावनहार मुझे निमित्त बनाकर सेवा करवा रहा है। इस अभ्यास से हम बच्चे सहज ही नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बन जायेंगे। ❖

सबसे प्यारा बन्धन

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी, गुरुग्राम

रक्षा-बन्धन जीवन का, बन्धन सबसे प्यारा है।
पावनता का सूत्र यही, प्रेम की बहती धारा है।।

जीवन का है सत्य यही, प्रभु का ये मीठा प्रसाद।
आचरण श्रेष्ठ बनाता ये, मिट जाते सारे अवसाद।।
हर कोई बन्धना चाहे इसमें, खुशियों का यही नज़ारा है।
रक्षा-बन्धन जीवन का, बन्धन सबसे प्यारा है।।

आत्मा का आत्मा से नाता, श्रेष्ठ और मधुरस छलकाता।
शुभ भावों का होता संगम, हर चेहरा आनन्द लुटाता।।
मन में नई उमंगों का, अहसास कराता न्यारा है।
रक्षा-बन्धन जीवन का, बन्धन सबसे प्यारा है।।

खुशबू इसकी भीनी-भीनी, महके दशों दिशाओं में।
रंग नये बिखराते हैं, हर पल मंद हवाओं में।।
आशाओं का ये चिराग, इसने जीवन को तारा है।
रक्षा-बन्धन जीवन का, बन्धन सबसे प्यारा है।।

शिखर पे ये ले जाता है, उन्नति का इसमें प्रकाश।
भव बाधा सब मिट जाती, मिलता एक नया आकाश।।
परिवर्तन का ये सूत्रधार, दे सबको सहज किनारा है।
रक्षा-बन्धन जीवन का, बन्धन सबसे प्यारा है।।

घुटनों की प्रत्यारोपण सर्जरी

घुटनों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है। सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें: **डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल:** 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49
वेबसाइट: www.ghrc-abu.com फैक्स: (02974) 238570
ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

कार्यस्थल की उन्नति में सहायक बना परमात्म-ज्ञान

ब्रह्माकुमार शुभ्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

'जब कोई भी कार्य करते हो तो बड़ा दिल रखो और दूसरों को सहयोगी बनाने में भी बड़ा दिल रखो। बड़ा दिल रखने से मिट्टी भी सोना हो जाती है, कमजोर साथी भी शक्तिशाली बन जाते हैं, असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं।' परमात्मा पिता के ये अनमोल महावाक्य मेरे कर्मक्षेत्र की स्थितियों को परिवर्तन करने में प्रेरणादायी सिद्ध हुए। मैं पिछले दो साल से एक फार्मास्यूटिकल कम्पनी में मार्केटिंग मैनेजर के पद पर कार्यरत हूँ। कार्यभार संभालते ही संस्था ने मुझे एक विशेष प्रोजेक्ट सौंपा और निर्धारित समय में पूरा करने को कहा। प्रोजेक्ट था – संस्था कई महीनों से जिस आर्थिक नुकसान का सामना कर रही है उसे मिटाना और साथ ही संस्था के प्रतिनिधि वर्ग को अच्छे से प्रशिक्षण देना जिससे वे सही रीति से कार्य कर सकें।

आपसी मतभेद और प्रशिक्षण का अभाव

जब यह कार्य सौंपा गया तब मैं बहुत उत्साहित था परन्तु इसे सफल बनाने में बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वहाँ के वातावरण में बहुत नकारात्मकता थी। उच्च पदाधिकारियों, प्रतिनिधिवर्ग और कर्मचारियों में आपसी मतभेद थे जिस कारण वे सही रीति से काम नहीं कर पा रहे थे। सही प्रशिक्षण का भी अभाव था। कार्यभार ग्रहण करते ही सबसे पहले मैं नकारात्मक वातावरण को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाने के लिए दृढ़ हुआ। भगवान शिव के महावाक्यों से मिले मार्गदर्शन के अनुसार, मैं उच्च पदाधिकारियों और कर्मचारियों के बीच भेदभाव वाले संबंध दूर करके आपसी सहयोग बनाने का प्रयास करने लगा।

शुभभावनाओं का सुप्रभाव

कार्यस्थल पर कार्य प्रारम्भ करने से पहले हर दिन कुछ समय राजयोग का अभ्यास और आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा करने लगा। मैंने निजी पुरुषार्थ से प्रतिदिन अमृतवेले और नुमाशाम के योग अभ्यास में संस्था की सभी आत्माओं को शुभभावनाएँ और सहयोग की भावनाएँ प्रदान कीं जिसका परिणाम कुछ ही दिनों में दिखने लगा। सभी उच्च पदाधिकारी और कर्मचारी, आपसी भेदभाव भूल कर एक-दूसरे के सहयोगी बन गये। सभी एक-दूसरे के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने लगे। उच्च पदाधिकारी अपने अधीनस्थ को साथ लेकर कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न करने लगे। हर कर्मचारी ने भी अपना दायित्व कुशलतापूर्वक निभाना प्रारम्भ किया। कर्मचारियों के प्रशिक्षण के दौरान उन्हें जीवन-मूल्यों तथा मानवीय मूल्यों की जानकारी प्रदान की गई जिससे उनकी आन्तरिक शक्ति जागृत होने लगी एवं चुनौतियों का सामना करने में समर्थ होने लगे। कुछ प्रतिनिधियों के खराब व्यवहार के कारण, जिन्होंने भी हमारी संस्था से सम्बन्ध खत्म कर दिए थे, वे उनके बदले हुए व्यवहार को देखकर फिर से संस्था के करीब आ गए और शहर के नामीग्रामी अस्पताल भी हमारे साथ जुड़ गये हैं। संस्था अपने आर्थिक नुकसान से सम्पूर्ण उबरकर, अपनी खोई हुई गरिमा को प्राप्त करने में सक्षम रही है।

इस असम्भव जैसे कार्य को सफल कराने के लिए मैं परमात्मा पिता का दिल से शुक्रिया करता हूँ। प्यारे बाबा का अनुपम ज्ञान हर परिस्थिति में मेरा मार्गदर्शक बना और साथ ही निमित्त बहनों का भी शुक्रिया जिन्होंने मुझे आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर संपूर्ण सहयोग दिया।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

'पत्र' संपादक के नाम

मार्च अंक में 'दान, महादान और वरदान" लेख में यह सीख दी गई है कि परमात्मा की प्राप्ति सिर्फ संन्यास लेने से नहीं बल्कि गृहस्थ में रहकर हर कर्त्तव्य करते हुए भी हो सकती है। समाज के ऊपर निर्भर न रहते हुए, समाज की हर संभव सेवा करते हुए योगी बना जा सकता है।

ब्रह्माकुमार हरिशंकर जोशी, बोरिवली पूर्व, मुम्बई

अप्रैल, 2017 का सम्पादकीय 'धर्म और धन' बहुत ही अच्छा लगा। वर्तमान समय धन तो प्राय: सभी के पास है लेकिन धर्म के अभाव में मनुष्य पंगु बन गया है। जीवन में सुख-शान्ति के लिए धन के साथ धर्म बहुत ही जरूरी है। भारत वर्ष में क्या-क्या सेवाएँ चल रही हैं, उसका सुन्दर संदेश हर पत्रिका में छपे चित्रों के माध्यम से हम भाई-बहनों को मिलता रहता है। पत्रिका के हर पेज में नीचे बहुत महत्त्वपूर्ण स्लोगन पढ़ने को मिलते हैं। हमें ज्ञानामृत का बेसब्री से इन्तजार रहता है।

ब्रह्माकुमार रामलखन, रायपुर (छ.ग.)

मई, 2017 अंक में सम्पादकीय 'स्वामी बनें, दास नहीं' प्रेरणादायी लगा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पधारे गणमान्यजनों के ओजस्वी विचार एवं अनुभव बहुत ऊर्जावान लगे।

ब्रह्माकुमार रामचन्द्र शर्मा, पीलीबंगा, हनुमानगढ़ (राज.)

अप्रैल, 2017 अंक में प्रकाशित 'नर सशक्तिकरण' बहुत अच्छा लगा। आज चारों और नारी सुरक्षा को लेकर इतनी चिंताए चल रही हैं, उसमें नर की भूमिका कितनी बड़ी है, यह समझने की बात है। हर रिश्ता पूजनीय है। नर खुद को बदलेंगे तो कोई सूर्पनखा नहीं बनेगी।

रत्नादास घोष, पूर्णियाँ (बिहार)

ज्ञानामृत पत्रिका के हर अंक में छपे लेख दिल को भाने वाले होते हैं क्योंकि लेखकों की रचनाएँ कोरी कल्पना या कहीं से उधार ली हुई नहीं होती बल्कि अनुभव के आधार पर स्वरचित और दिल में उमड़ते भावों से ओत-प्रोत होती हैं। साथ ही पत्रिका के प्रत्येक पेज पर नीचे की ओर दी गयी आकर्षक सुक्तियाँ मनन-मंथन करने योग्य होती हैं जो पत्रिका की उपयोगिता को और बढ़ा देती हैं। मई, 2017 का ज्ञानामृत अंक तो अपने आप में और ही विशेष बन गया है क्योंकि मार्च, 2017 में शान्तिवन परिसर में 'विश्व परिवर्तन के लिए परमात्म ज्ञान' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पधारे एक से बढ़कर एक विद्वान वक्ताओं के ओजस्वी विचारों का इसमें संकलन है, जो पाठकों को सम्पूर्ण सम्मेलन की जानकारी देने में सक्षम है। वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से भारत के प्रधानमंत्री द्वारा व्यक्त विचार भी ब्रह्माकुमारीज के प्रति उनके सम्मान को व्यक्त करते हैं। इतने अल्प समय में अथक मेहनत से पूरे सम्मेलन का वृत्तांन्त प्रकाशित करने के लिए ज्ञानामृत पत्रिका का सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल बहुत-बहुत सम्मान का पात्र है, सभी को साधुवाद।

ब्रह्माकुमार के.एल.छावड़ा, रुड़की (उत्तराखंड)

पहले क्षमा मांगने वाला सबसे बहादुर है,
पहले क्षमा करने वाला सबसे शक्तिशाली है,
जो भूल जाता है, वह सबसे सुखी है।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : August, 2017.

रक्षा-बन्धन के पावन पर्व पर

दादी जानकी जी का

दिव्य सन्देश

विश्व-रक्षक पिता परमात्मा के ज्ञान, गुण और शक्तियों की छत्रछाया में सदा सुरक्षित रहने वाले सर्व भाई-बहनें,

रक्षाबन्धन तथा जन्माष्टमी पर्व की आप सबको कोटी-कोटी बधाइयाँ।

इस बेहद सृष्टि-मंच पर अपनी-अपनी भूमिका अदा करने वाली हम सब आत्माएँ एक ही पिता परमात्मा की सन्तान और आपस में भाई-भाई हैं।

बेहद विश्व परिवार से जोड़ने वाला, एक की याद द्वारा एकता की माला में पिरोने वाला, उमंग-उत्साह तथा खुशी की खुराक से निरोगी और दीर्घायु बनाने वाला यह प्यारा रक्षाबन्धन पर्व हम सबके लिए अमूल्य ईश्वरीय उपहार है।

परमात्मा पिता की श्रेष्ठ मत पर चलते हुए हम मन, वचन, कर्म तथा स्वप्न में भी पूर्ण पवित्रता को अपनाएँ, यह इस पर्व का पावन सन्देश है।

दिल की शुभकामना है कि सच्चे दिल से रहमदिल बनकर, 'पवित्र भव, योगी भव' के मन्त्र को याद रखते हुए दृढ़ संकल्प से रक्षा-सूत्र को कलाई पर बाँधें। मधुर बोल की अविनाशी मिठाई एक-दो को खिलाएँ और मस्तक पर आत्म-स्वरूप में टिकने का टीका लगाएँ।

सच्चाई, पवित्रता, मधुरता तथा दृढ़ता की यह धारणा सदा के लिए आपको खुशनसीब बना देगी।

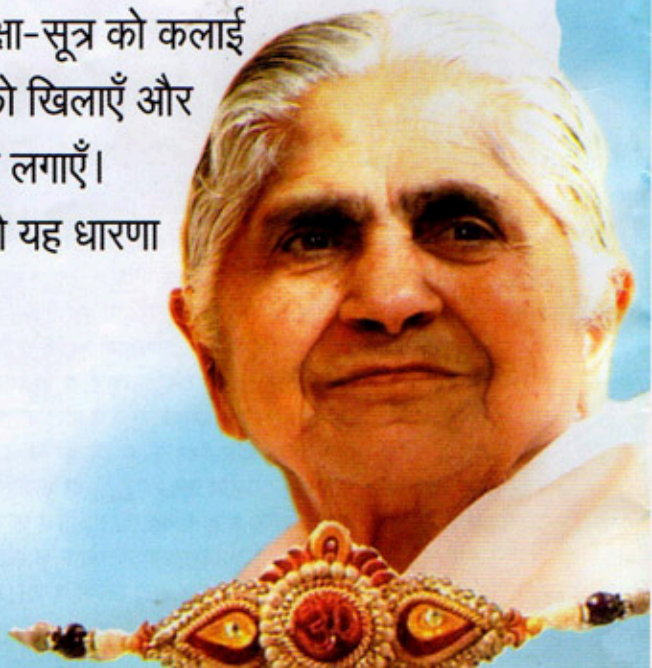

1

2

3

4

5

6

7

8

1.भिलाई- 'मीडियाकर्मियों का आन्तरिक सशक्तिकरण – वर्तमान समय की आवश्यकता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात पत्रकार भ्राता सुमित अवस्थी, पत्रकारिता वि.वि.रायपुर के कुलपति डॉ.मानसिंह परमार, 'अमृत सन्देश' के प्रधान सम्पादक भ्राता गोविन्द लाल वोरा, वरिष्ठ पत्रकार भ्राता रमेश नैयर, प्रो.कमल दीक्षित, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। **2.पालनपुर-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री हरिभाई चौधरी, ब्र.कु.राजूभाई, विधायक महेश भाई पटेल, स्वामीनारायण गुरुकुल के श्री शास्त्री रंगस्वामी तथा ब्र.कु.भारती बहन। **3.देहरादून-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए स्वामी श्री श्री शिव रघुवंश पुरी जी, विधानसभा अध्यक्ष भ्राता प्रेमचन्द अग्रवाल, ब्र.कु.प्रेमलता बहन, ब्र.कु.मंजू बहन तथा अन्य। **4.इन्दौर-** 'अल्मा-राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार-2017', केन्द्रीय लघु, सूक्ष्म तथा मध्यम उद्योग मंत्री भ्राता कलराज मिश्रा से प्राप्त करते हुए ब्रह्माकुमार सूरज भाई। साथ में उपस्थित हैं गांधीवादी नेता डॉ.एस.एन.सुब्बा राव, अल्मा पुरस्कार के निदेशक डॉ.संतोष शुक्ला, ब्र.कु.शशि बहन, ब्र.कु.उषा बहन तथा ब्र.कु.संदीप भाई। **5.वाराणसी-** केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री भ्राता मनोज सिन्हा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन। **6.रायपुर-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योग महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए 'ज्ञानामृत' के सम्पादक ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, गृह सचिव भ्राता अरुण देव गौतम, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.सविता बहन तथा ब्र.कु.रश्मि बहन। **7.रुड़की-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उत्तराखंड के शहरी विकास मन्त्री भ्राता मदन कौशिक, ब्र.कु.बिमला बहन तथा ब्र.कु.सोनिया बहन। **8.ग्वालियर-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर म.प्र.की नगरीय विकास एवं आवास मन्त्री बहन माया सिंह तथा क्षेत्र विकास प्राधिकरण अध्यक्ष भ्राता राकेश जादौन, ब्र.कु.आदर्श बहन को विशेष सहयोग के लिए सर्टिफिकेट देकर सम्मानित करते हुए।